आओ

तौरेत-ओ-इंजील को

समझें

किताब-ए-मुक़द्दस के 25 मर्कज़ी हवालजात

चश्मा मीडिया

आओ

तौरेत-ओ-इंजील को

समझें

किताब-ए-मुक़द्दस के 25 मर्कज़ी हवालजात

चश्मा मीडिया

āo, tauret-o-injīl ko samjheṅ.
kitāb-e-muqaddas ke 25 markazī hawālajāt

Bible quotations are from UGV.
Editing, design and layout (2017) by
Chashma Media, www.chashmamedia.org

फ़हरिस्त-ए-मज़ामीन

1	काइनात की तख़्लीक़	5
2	इन्सान की तख़्लीक़	7
3	गुनाह का आग़ाज़ और अल्लाह का फ़ैसला	9
4	गुनाह में फंसी हुई दुनिया की अदालत	10
5	बड़े सैलाब की अदालत	11
6	इब्राहीम से अल्लाह का वादा	18
7	इस्हाक़ की क़ुर्बानी	19
8	ईद-ए-फ़सह का वादा	21
9	दस अह्काम	23
10	क़ुर्बानी का इन्तिज़ाम	25
11	मौऊदा मसीह हमारे गुनाहों को उठाएगा	28
12	हज़रत ईसा की पैदाइश	30
13	हज़रत ईसा का बपतिस्मा	33
14	उल-मसीह को आज़माया जाता है	35
15	हज़रत ईसा और नीकदीमस	36
16	हज़रत ईसा और सामरी औरत	38
17	हज़रत ईसा मुआफ़ करते और शिफ़ा देते हैं	40
18	हज़रत ईसा तूफ़ान को थमा देते हैं	41
19	हज़रत ईसा बदरूहों को निकाल देते हैं	42
20	हज़रत ईसा लाज़र को ज़िन्दा कर देते हैं	44

21 शागिर्दों के साथ आख़िरी खाना 47
22 हज़रत ईसा को मुजरिम ठहराया जाता है 48
23 हज़रत ईसा को मस्लूब किया जाता है 54
24 हज़रत ईसा मौत पर फ़तह पाते हैं 56
25 शागिर्दों पर ज़ुहूर और सऊद-ए-मसीह 59
26 इन्तिख़ाब की ज़रूरत है 60

1 काइनात की तख़्लीक़

पैदाइश 1:1-25

पहला दिन : रौशनी

[1]इब्तिदा में अल्लाह ने आसमान और ज़मीन को बनाया। [2]अभी तक
ज़मीन वीरान और ख़ाली थी। वह गहरे पानी से ढकी हुई थी जिस के
ऊपर अंधेरा ही अंधेरा था। अल्लाह का रूह पानी के ऊपर मंडला रहा
था।

[3]फिर अल्लाह ने कहा, "रौशनी हो जाए" तो रौशनी पैदा हो गई।
[4]अल्लाह ने देखा कि रौशनी अच्छी है, और उस ने रौशनी को तारीकी
से अलग कर दिया। [5]अल्लाह ने रौशनी को दिन का नाम दिया और
तारीकी को रात का। शाम हुई, फिर सुब्ह। यूँ पहला दिन गुज़र गया।

दूसरा दिन : आसमान

[6]अल्लाह ने कहा, "पानी के दरमियान एक ऐसा गुम्बद पैदा हो जाए
जिस से निचला पानी ऊपर के पानी से अलग हो जाए।" [7]ऐसा ही हुआ।
अल्लाह ने एक ऐसा गुम्बद बनाया जिस से निचला पानी ऊपर के पानी
से अलग हो गया। [8]अल्लाह ने गुम्बद को आसमान का नाम दिया। शाम
हुई, फिर सुब्ह। यूँ दूसरा दिन गुज़र गया।

तीसरा दिन : ख़ुश्क ज़मीन और पौदे

[9]अल्लाह ने कहा, “जो पानी आसमान के नीचे है वह एक जगह जमा हो जाए ताकि दूसरी तरफ़ ख़ुश्क जगह नज़र आए।” ऐसा ही हुआ।
[10]अल्लाह ने ख़ुश्क जगह को ज़मीन का नाम दिया और जमाशुदा पानी को समुन्दर का। और अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। [11]फिर उस ने कहा, “ज़मीन हरियावल पैदा करे, ऐसे पौदे जो बीज रखते हों और ऐसे दरख़्त जिन के फल अपनी अपनी क़िस्म के बीज रखते हों।” ऐसा ही हुआ। [12]ज़मीन ने हरियावल पैदा की, ऐसे पौदे जो अपनी अपनी क़िस्म के बीज रखते और ऐसे दरख़्त जिन के फल अपनी अपनी क़िस्म के बीज रखते थे। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। [13]शाम हुई, फिर सुब्ह। यूँ तीसरा दिन गुज़र गया।

चौथा दिन : सूरज, चाँद और सितारे

[14]अल्लाह ने कहा, “आसमान पर रौशनियाँ पैदा हो जाएँ ताकि दिन और रात में इम्तियाज़ हो और इसी तरह मुख़्तलिफ़ मौसमों, दिनों और सालों में भी। [15]आसमान की यह रौशनियाँ दुनिया को रौशन करें।” ऐसा ही हुआ। [16]अल्लाह ने दो बड़ी रौशनियाँ बनाईं, सूरज जो बड़ा था दिन पर हुकूमत करने को और चाँद जो छोटा था रात पर। इन के इलावा उस ने सितारों को भी बनाया। [17]उस ने उन्हें आसमान पर रखा ताकि वह दुनिया को रौशन करें, [18]दिन और रात पर हुकूमत करें और रौशनी और तारीकी में इम्तियाज़ पैदा करें। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है।
[19]शाम हुई, फिर सुब्ह। यूँ चौथा दिन गुज़र गया।

पाँचवाँ दिन : पानी और हवा के जानदार

[20]अल्लाह ने कहा, “पानी आबी जानदारों से भर जाए और फ़िज़ा में परिन्दे उड़ते फिरें।” [21]अल्लाह ने बड़े बड़े समुन्दरी जानवर बनाए, पानी

की तमाम दीगर मख़्लूक़ात और हर क़िस्म के पर रखने वाले जानदार भी बनाए। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। [22]उस ने उन्हें बरकत दी और कहा, "फलो फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। समुन्दर तुम से भर जाए। इसी तरह परिन्दे ज़मीन पर तादाद में बढ़ जाएँ।" [23]शाम हुई, फिर सुब्ह। यूँ पाँचवाँ दिन गुज़र गया।

छटा दिन : ज़मीन पर चलने वाले जानवर और इन्सान

[24]अल्लाह ने कहा, "ज़मीन हर क़िस्म के जानदार पैदा करे : मवेशी, रेंगने वाले और जंगली जानवर।" ऐसा ही हुआ। [25]अल्लाह ने हर क़िस्म के मवेशी, रेंगने वाले और जंगली जानवर बनाए। उस ने देखा कि यह अच्छा है।

2 इन्सान की तख़्लीक़

पैदाइश 2:4-24

[4]यह आसमान-ओ-ज़मीन की तख़्लीक़ का बयान है। जब रब ख़ुदा ने आसमान-ओ-ज़मीन को बनाया [5]तो शुरू में झाड़ियाँ और पौदे नहीं उगते थे। वजह यह थी कि अल्लाह ने बारिश का इन्तिज़ाम नहीं किया था। और अभी इन्सान भी पैदा नहीं हुआ था कि ज़मीन की खेतीबाड़ी करता। [6]इस की बजाए ज़मीन में से धुन्द उठ कर उस की पूरी सतह को तर करती थी। [7]फिर रब ख़ुदा ने ज़मीन से मिट्टी ले कर इन्सान को तश्कील दिया और उस के नथनों में ज़िन्दगी का दम फूँका तो वह जीती जान हुआ।

[8]रब ख़ुदा ने मशरिक़ में मुल्क-ए-अदन में एक बाग़ लगाया। उस में उस ने उस आदमी को रखा जिसे उस ने बनाया था। [9]रब ख़ुदा के हुक्म पर ज़मीन में से तरह तरह के दरख़्त फूट निकले, ऐसे दरख़्त जो देखने

में दिलकश और खाने के लिए अच्छे थे। बाग़ के बीच में दो दरख़्त थे। एक का फल ज़िन्दगी बख़्शता था जबकि दूसरे का फल अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता था। [10]अदन में से एक दरया निकल कर बाग़ की आबपाशी करता था। वहाँ से बह कर वह चार शाख़ों में तक़्सीम हुआ। [11]पहली शाख़ का नाम फ़ीसून है। वह मुल्क-ए-हवीला को घेरे हुए बहती है जहाँ ख़ालिस सोना, गूगल का गूँद और अक़ीक़-ए-अह्मर पाए जाते हैं। [13]दूसरी का नाम जैहून है जो कूश को घेरे हुए बहती है। [14]तीसरी का नाम दिजला है जो असूर के मशरिक़ को जाती है और चौथी का नाम फ़ुरात है।

[15]रब ख़ुदा ने पहले आदमी को बाग़-ए-अदन में रखा ताकि वह उस की बाग़बानी और हिफ़ाज़त करे। [16]लेकिन रब ख़ुदा ने उसे आगाह किया, "तुझे हर दरख़्त का फल खाने की इजाज़त है। [17]लेकिन जिस दरख़्त का फल अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता है उस का फल खाना मना है। अगर उसे खाए तो यक़ीनन मरेगा।"

[18]रब ख़ुदा ने कहा, "अच्छा नहीं कि आदमी अकेला रहे। मैं उस के लिए एक मुनासिब मददगार बनाता हूँ।"

[19]रब ख़ुदा ने मिट्टी से ज़मीन पर चलने फिरने वाले जानवर और हवा के परिन्दे बनाए थे। अब वह उन्हें आदमी के पास ले आया ताकि मालूम हो जाए कि वह उन के क्या क्या नाम रखेगा। यूँ हर जानवर को आदम की तरफ़ से नाम मिल गया। [20]आदमी ने तमाम मवेशियों, परिन्दों और ज़मीन पर फिरने वाले जानदारों के नाम रखे। लेकिन उसे अपने लिए कोई मुनासिब मददगार न मिला।

[21]तब रब ख़ुदा ने उसे सुला दिया। जब वह गहरी नींद सो रहा था तो उस ने उस की पसलियों में से एक निकाल कर उस की जगह गोश्त भर दिया। [22]पसली से उस ने औरत बनाई और उसे आदमी के पास ले आया। [23]उसे देख कर वह पुकार उठा, "वाह! यह तो मुझ जैसी ही है, मेरी हड्डियों में से हड्डी और मेरे गोश्त में से गोश्त है। इस का नाम

नारी रखा जाए क्यूँकि वह नर से निकाली गई है।” [24]इस लिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़ कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है, और वह दोनों एक हो जाते हैं।

3 गुनाह का आग़ाज़ और अल्लाह का फ़ैसला

पैदाइश 3:1-13

[1]साँप ज़मीन पर चलने फिरने वाले उन तमाम जानवरों से ज़्यादा चालाक था जिन को रब ख़ुदा ने बनाया था। उस ने औरत से पूछा, “क्या अल्लाह ने वाक़ई कहा कि बाग़ के किसी भी दरख़्त का फल न खाना?” [2]औरत ने जवाब दिया, “हरगिज़ नहीं। हम बाग़ का हर फल खा सकते हैं, [3]सिर्फ़ उस दरख़्त के फल से गुरेज़ करना है जो बाग़ के बीच में है। अल्लाह ने कहा कि उस का फल न खाओ बल्कि उसे छूना भी नहीं, वर्ना तुम यक़ीनन मर जाओगे।” [4]साँप ने औरत से कहा, “तुम हरगिज़ न मरोगे, [5]बल्कि अल्लाह जानता है कि जब तुम उस का फल खाओगे तो तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी और तुम अल्लाह की मानिन्द हो जाओगे, तुम जो भी अच्छा और बुरा है उसे जान लोगे।”

[6]औरत ने दरख़्त पर ग़ौर किया कि खाने के लिए अच्छा और देखने में भी दिलकश है। सब से दिलफ़रेब बात यह कि उस से समझ हासिल हो सकती है! यह सोच कर उस ने उस का फल ले कर उसे खाया। फिर उस ने अपने शौहर को भी दे दिया, क्यूँकि वह उस के साथ था। उस ने भी खा लिया। [7]लेकिन खाते ही उन की आँखें खुल गईं और उन को मालूम हुआ कि हम नंगे हैं। चुनाँचे उन्हों ने अन्जीर के पत्ते सी कर लुंगियाँ बना लीं। [8]शाम के वक़्त जब ठंडी हवा चलने लगी तो उन्हों ने रब ख़ुदा को बाग़ में चलते फिरते सुना। वह डर के मारे दरख़्तों के पीछे छुप गए। [9]रब ख़ुदा ने पुकार कर कहा, “आदम, तू कहाँ है?” [10]आदम ने जवाब दिया, “मैं ने तुझे बाग़ में चलते हुए सुना तो डर गया, क्यूँकि

मैं नंगा हूँ। इस लिए मैं छुप गया।” [11]उस ने पूछा, “किस ने तुझे बताया कि तू नंगा है? क्या तू ने उस दरख़्त का फल खाया है जिसे खाने से मैं ने मना किया था?” [12]आदम ने कहा, “जो औरत तू ने मेरे साथ रहने के लिए दी है उस ने मुझे फल दिया। इस लिए मैं ने खा लिया।” [13]अब रब ख़ुदा औरत से मुख़ातिब हुआ, “तू ने यह क्यूँ किया?” औरत ने जवाब दिया, “साँप ने मुझे बहकाया तो मैं ने खाया।”

4 गुनाह में फंसी हुई दुनिया की अदालत

पैदाइश 3:14-24

[14]रब ख़ुदा ने साँप से कहा, “चूँकि तू ने यह किया, इस लिए तू तमाम मवेशियों और जंगली जानवरों में लानती है। तू उम्र भर पेट के बल रेंगेगा और ख़ाक चाटेगा। [15]मैं तेरे और औरत के दरमियान दुश्मनी पैदा करूँगा। उस की औलाद तेरी औलाद की दुश्मन होगी। वह तेरे सर को कुचल डालेगी जबकि तू उस की एड़ी पर काटेगा।”

[16]फिर रब ख़ुदा औरत से मुख़ातिब हुआ और कहा, “जब तू उम्मीद से होगी तो मैं तेरी तक्लीफ़ को बहुत बढ़ाऊँगा। जब तेरे बच्चे होंगे तो तू शदीद दर्द का शिकार होगी। तू अपने शौहर की तमन्ना करेगी लेकिन वह तुझ पर हुकूमत करेगा।” [17]आदम से उस ने कहा, “तू ने अपनी बीवी की बात मानी और उस दरख़्त का फल खाया जिसे खाने से मैं ने मना किया था। इस लिए तेरे सबब से ज़मीन पर लानत है। उस से ख़ुराक हासिल करने के लिए तुझे उम्र भर मेहनत-मशक़्क़त करनी पड़ेगी। [18]तेरे लिए वह ख़ारदार पौदे और ऊँटकटारे पैदा करेगी, हालाँकि तू उस से अपनी ख़ुराक भी हासिल करेगा। [19]पसीना बहा बहा कर तुझे रोटी कमाने के लिए भाग-दौड़ करनी पड़ेगी। और यह सिलसिला मौत तक जारी रहेगा। तू मेहनत करते करते दुबारा ज़मीन में लौट जाएगा, क्यूँकि तू उसी से लिया गया है। तू ख़ाक है और दुबारा ख़ाक में मिल जाएगा।”

[20]आदम ने अपनी बीवी का नाम हव्वा यानी ज़िन्दगी रखा, क्यूँकि बाद में वह तमाम ज़िन्दों की माँ बन गई। [21]रब ख़ुदा ने आदम और उस की बीवी के लिए खालों से लिबास बना कर उन्हें पहनाया। [22]उस ने कहा, "इन्सान हमारी मानिन्द हो गया है, वह अच्छे और बुरे का इल्म रखता है। अब ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ा कर ज़िन्दगी बख़्शने वाले दरख़्त के फल से ले और उस से खा कर हमेशा तक ज़िन्दा रहे।" [23]इस लिए रब ख़ुदा ने उसे बाग़-ए-अदन से निकाल कर उस ज़मीन की खेतीबाड़ी करने की ज़िम्मादारी दी जिस में से उसे लिया गया था। [24]इन्सान को ख़ारिज करने के बाद उस ने बाग़-ए-अदन के मशरिक़ में करूबी फ़रिश्ते खड़े किए और साथ साथ एक आतिशी तलवार रखी जो इधर उधर घूमती थी ताकि उस रास्ते की हिफ़ाज़त करे जो ज़िन्दगी बख़्शने वाले दरख़्त तक पहुँचाता था।

5 बड़े सैलाब की अदालत

पैदाइश बाब 6

लोगों की ज़ियादतियाँ

[1]दुनिया में लोगों की तादाद बढ़ने लगी। उन के हाँ बेटियाँ पैदा हुईं। [2]तब आसमानी हस्तियों ने देखा कि बनी नौ इन्सान की बेटियाँ ख़ूबसूरत हैं, और उन्हों ने उन में से कुछ चुन कर उन से शादी की। [3]फिर रब ने कहा, "मेरी रूह हमेशा के लिए इन्सान में न रहे क्यूँकि वह फ़ानी मख़्लूक़ है। अब से वह 120 साल से ज़्यादा ज़िन्दा नहीं रहेगा।" [4]उन दिनों में और बाद में भी दुनिया में देओक़ामत अफ़राद थे जो इन्सानी औरतों और उन आसमानी हस्तियों की शादियों से पैदा हुए थे। यह देओक़ामत अफ़राद क़दीम ज़माने के मश्हूर सूरमा थे।

5रब ने देखा कि इन्सान निहायत बिगड़ गया है, कि उस के तमाम
ख़यालात लगातार बुराई की तरफ़ माइल रहते हैं। 6वह पछताया कि मैं
ने इन्सान को बना कर दुनिया में रख दिया है, और उसे सख़्त दुख हुआ।
7उस ने कहा, "गो मैं ही ने इन्सान को ख़ल्क़ किया मैं उसे रू-ए-ज़मीन
पर से मिटा डालूँगा। मैं न सिर्फ़ लोगों को बल्कि ज़मीन पर चलने फिरने
और रेंगने वाले जानवरों और हवा के परिन्दों को भी हलाक कर दूँगा,
क्यूँकि मैं पछताता हूँ कि मैं ने उन को बनाया।"

बड़े सैलाब के लिए नूह की तय्यारियाँ

8सिर्फ़ नूह पर रब की नज़र-ए-करम थी। 9यह उस की ज़िन्दगी का
बयान है।

नूह रास्तबाज़ था। उस ज़माने के लोगों में सिर्फ़ वही बेक़ुसूर था। वह
अल्लाह के साथ साथ चलता था। 10नूह के तीन बेटे थे, सिम, हाम और
याफ़त। 11लेकिन दुनिया अल्लाह की नज़र में बिगड़ी हुई और ज़ुल्म-
ओ-तशद्दुद से भरी हुई थी। 12जहाँ भी अल्लाह देखता दुनिया ख़राब थी,
क्यूँकि तमाम जानदारों ने ज़मीन पर अपनी रविश को बिगाड़ दिया था।
13तब अल्लाह ने नूह से कहा, "मैं ने तमाम जानदारों को ख़त्म करने
का फ़ैसला किया है, क्यूँकि उन के सबब से पूरी दुनिया ज़ुल्म-ओ-
तशद्दुद से भर गई है। चुनाँचे मैं उन को ज़मीन समेत तबाह कर दूँगा।
14अब अपने लिए सर्व की लकड़ी की कश्ती बना ले। उस में कमरे हों
और उसे अन्दर और बाहर तारकोल लगा। 15उस की लम्बाई 450 फ़ुट,
चौड़ाई 75 फ़ुट और ऊँचाई 45 फ़ुट हो। 16कश्ती की छत को यूँ बनाना
कि उस के नीचे 18 इंच खुला रहे। एक तरफ़ दरवाज़ा हो, और उस
की तीन मन्ज़िलें हों। 17मैं पानी का इतना बड़ा सैलाब लाऊँगा कि वह
ज़मीन के तमाम जानदारों को हलाक कर डालेगा। ज़मीन पर सब कुछ
फ़ना हो जाएगा। 18लेकिन तेरे साथ मैं अह्द बांधूँगा जिस के तहत तू
अपने बेटों, अपनी बीवी और बहूओं के साथ कश्ती में जाएगा। 19हर

क़िस्म के जानवर का एक नर और एक मादा भी अपने साथ कश्ती में ले जाना ताकि वह तेरे साथ जीते बचें। [20]हर क़िस्म के पर रखने वाले जानवर और हर क़िस्म के ज़मीन पर फिरने या रेंगने वाले जानवर दो दो हो कर तेरे पास आएँगे ताकि जीते बच जाएँ। [21]जो भी ख़ुराक दरकार है उसे अपने और उन के लिए जमा करके कश्ती में महफ़ूज़ कर लेना।”

[22]नूह ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा अल्लाह ने उसे बताया।

पैदाइश बाब 7

सैलाब का अग़ाज़

[1]फिर रब ने नूह से कहा, “अपने घराने समेत कश्ती में दाख़िल हो जा, क्यूँकि इस दौर के लोगों में से मैं ने सिर्फ़ तुझे रास्तबाज़ पाया है। [2]हर क़िस्म के पाक जानवरों में से सात सात नर-ओ-मादा के जोड़े जबकि नापाक जानवरों में से नर-ओ-मादा का सिर्फ़ एक एक जोड़ा साथ ले जाना। [3]इसी तरह हर क़िस्म के पर रखने वालों में से सात सात नर-ओ-मादा के जोड़े भी साथ ले जाना ताकि उन की नस्लें बची रहें। [4]एक हफ़्ते के बाद मैं चालीस दिन और चालीस रात मुतवातिर बारिश बरसाऊँगा। इस से मैं तमाम जानदारों को रू-ए-ज़मीन पर से मिटा डालूँगा, अगरचे मैं ही ने उन्हें बनाया है।”

[5]नूह ने वैसा ही किया जैसा रब ने हुक्म दिया था। [6]वह 600 साल का था जब यह तूफ़ानी सैलाब ज़मीन पर आया। [7]तूफ़ानी सैलाब से बचने के लिए नूह अपने बेटों, अपनी बीवी और बहूओं के साथ कश्ती में सवार हुआ। [8]ज़मीन पर फिरने वाले पाक और नापाक जानवर, पर रखने वाले और तमाम रेंगने वाले जानवर भी आए। [9]नर-ओ-मादा की सूरत में दो दो हो कर वह नूह के पास आ कर कश्ती में सवार हुए। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा अल्लाह ने नूह को हुक्म दिया था। [10]एक हफ़्ते के बाद तूफ़ानी सैलाब ज़मीन पर आ गया।

[11]यह सब कुछ उस वक़्त हुआ जब नूह 600 साल का था। दूसरे महीने के 17वें दिन ज़मीन की गहराइयों में से तमाम चश्मे फूट निकले और आसमान पर पानी के दरीचे खुल गए। [12]चालीस दिन और चालीस रात तक मूसलाधार बारिश होती रही। [13]जब बारिश शुरू हुई तो नूह, उस के बेटे सिम, हाम और याफ़त, उस की बीवी और बहूएँ कश्ती में सवार हो चुके थे। [14]उन के साथ हर क़िस्म के जंगली जानवर, मवेशी, रेंगने और पर रखने वाले जानवर थे। [15]हर क़िस्म के जानदार दो दो हो कर नूह के पास आ कर कश्ती में सवार हो चुके थे। [16]नर-ओ-मादा आए थे। सब कुछ वैसा ही हुआ था जैसा अल्लाह ने नूह को हुक्म दिया था। फिर रब ने दरवाज़े को बन्द कर दिया।

[17]चालीस दिन तक तूफ़ानी सैलाब जारी रहा। पानी चढ़ा तो उस ने कश्ती को ज़मीन पर से उठा लिया। [18]पानी ज़ोर पकड़ कर बहुत बढ़ गया, और कश्ती उस पर तैरने लगी। [19]आख़िरकार पानी इतना ज़्यादा हो गया कि तमाम ऊँचे पहाड़ भी उस में छुप गए, [20]बल्कि सब से ऊँची चोटी पर पानी की गहराई 20 फ़ुट थी। [21]ज़मीन पर रहने वाली हर मख़्लूक़ हलाक हुई। परिन्दे, मवेशी, जंगली जानवर, तमाम जानदार जिन से ज़मीन भरी हुई थी और इन्सान, सब कुछ मर गया। [22]ज़मीन पर हर जानदार मख़्लूक़ हलाक हुई। [23]यूँ हर मख़्लूक़ को रू-ए-ज़मीन पर से मिटा दिया गया। इन्सान, ज़मीन पर फिरने और रेंगने वाले जानवर और परिन्दे, सब कुछ ख़त्म कर दिया गया। सिर्फ़ नूह और कश्ती में सवार उस के साथी बच गए।

[24]सैलाब डेढ़ सौ दिन तक ज़मीन पर ग़ालिब रहा।

सैलाब का इख़तिताम

[1]लेकिन अल्लाह को नूह और तमाम जानवर याद रहे जो कश्ती में थे। उस ने हवा चला दी जिस से पानी कम होने लगा। [2]ज़मीन के चश्मे और आसमान पर के पानी के दरीचे बन्द हो गए, और बारिश रुक गई। [3]पानी घटता गया। 150 दिन के बाद वह काफ़ी कम हो गया था। [4]सातवें महीने के 17वें दिन कश्ती अरारात के एक पहाड़ पर टिक गई। [5]दसवें महीने के पहले दिन पानी इतना कम हो गया था कि पहाड़ों की चोटियाँ नज़र आने लगी थीं।

[6-7]चालीस दिन के बाद नूह ने कश्ती की खिड़की खोल कर एक कव्वा छोड़ दिया, और वह उड़ कर चला गया। लेकिन जब तक ज़मीन पर पानी था वह आता जाता रहा। [8]फिर नूह ने एक कबूतर छोड़ दिया ताकि पता चले कि ज़मीन पानी से निकल आई है या नहीं। [9]लेकिन कबूतर को कहीं भी बैठने की जगह न मिली, क्यूँकि अब तक पूरी ज़मीन पर पानी ही पानी था। वह कश्ती और नूह के पास वापस आ गया, और नूह ने अपना हाथ बढ़ाया और कबूतर को पकड़ कर अपने पास कश्ती में रख लिया।

[10]उस ने एक हफ़्ता और इन्तिज़ार करके कबूतर को दुबारा छोड़ दिया। [11]शाम के वक़्त वह लौट आया। इस दफ़ा उस की चोंच में ज़ैतून का ताज़ा पत्ता था। तब नूह को मालूम हुआ कि ज़मीन पानी से निकल आई है।

[12]उस ने मज़ीद एक हफ़्ते के बाद कबूतर को छोड़ दिया। इस दफ़ा वह वापस न आया।

[13]जब नूह 601 साल का था तो पहले महीने के पहले दिन ज़मीन की सतह पर पानी ख़त्म हो गया। तब नूह ने कश्ती की छत खोल दी और

देखा कि ज़मीन की सतह पर पानी नहीं है। [14]दूसरे महीने के 27वें दिन ज़मीन बिलकुल ख़ुश्क हो गई।

[15]फिर अल्लाह ने नूह से कहा, [16]"अपनी बीवी, बेटों और बहूओं के साथ कश्ती से निकल आ। [17]जितने भी जानवर साथ हैं उन्हें निकाल दे, ख़्वाह परिन्दे हों, ख़्वाह ज़मीन पर फिरने या रेंगने वाले जानवर। वह दुनिया में फैल जाएँ, नस्ल बढ़ाएँ और तादाद में बढ़ते जाएँ।" [18]चुनाँचे नूह अपने बेटों, अपनी बीवी और बहूओं समेत निकल आया। [19]तमाम जानवर और परिन्दे भी अपनी अपनी क़िस्म के गुरोहों में कश्ती से निकले।

[20]उस वक़्त नूह ने रब के लिए क़ुर्बानगाह बनाई। उस ने तमाम फिरने और उड़ने वाले पाक जानवरों में से कुछ चुन कर उन्हें ज़बह किया और क़ुर्बानगाह पर पूरी तरह जला दिया। [21]यह क़ुर्बानियाँ देख कर रब ख़ुश हुआ और अपने दिल में कहा, "अब से मैं कभी ज़मीन पर इन्सान की वजह से लानत नहीं भेजूँगा, क्यूँकि उस का दिल बचपन ही से बुराई की तरफ़ माइल है। अब से मैं कभी इस तरह तमाम जान रखने वाली मख़्लूक़ात को रू-ए-ज़मीन पर से नहीं मिटाऊँगा। [22]दुनिया के मुक़र्ररा औक़ात जारी रहेंगे। बीज बोने और फ़सल काटने का वक़्त, ठंड और तपिश, गर्मियों और सर्दियों का मौसम, दिन और रात, यह सब कुछ दुनिया के अख़ीर तक क़ाइम रहेगा।"

पैदाइश 9:1-17

अल्लाह का नूह के साथ अह्द

[1]फिर अल्लाह ने नूह और उस के बेटों को बरकत दे कर कहा, "फलो फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। दुनिया तुम से भर जाए [2]ज़मीन पर फिरने और रेंगने वाले जानवर, परिन्दे और मछलियाँ सब तुम से डरेंगे। उन्हें तुम्हारे इख़तियार में कर दिया गया है। [3]जिस तरह मैं ने तुम्हारे खाने

के लिए पौदों की पैदावार मुक़र्रर की है उसी तरह अब से तुम्हें हर क़िस्म के जानवर खाने की इजाज़त भी है। [4]लेकिन ख़बरदार! ऐसा गोश्त न खाना जिस में ख़ून है, क्यूँकि ख़ून में उस की जान है।

[5]किसी की जान लेना मना है। जो ऐसा करेगा उसे अपनी जान देनी पड़ेगी, ख़्वाह वह इन्सान हो या हैवान। मैं ख़ुद इस का मुतालबा करूँगा। [6]जो भी किसी का ख़ून बहाए उस का ख़ून भी बहाया जाएगा। क्यूँकि अल्लाह ने इन्सान को अपनी सूरत पर बनाया है।

[7]अब फलो फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। दुनिया में फैल जाओ।"

[8]तब अल्लाह ने नूह और उस के बेटों से कहा, [9]"अब मैं तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के साथ अह्द क़ाइम करता हूँ। [10]यह अह्द उन तमाम जानवरों के साथ भी होगा जो कश्ती में से निकले हैं यानी परिन्दों, मवेशियों और ज़मीन पर के तमाम जानवरों के साथ। [11]मैं तुम्हारे साथ अह्द बांध कर वादा करता हूँ कि अब से ऐसा कभी नहीं होगा कि ज़मीन की तमाम ज़िन्दगी सैलाब से ख़त्म कर दी जाएगी। अब से ऐसा सैलाब कभी नहीं आएगा जो पूरी ज़मीन को तबाह कर दे। [12]इस अबदी अह्द का निशान जो मैं तुम्हारे और तमाम जानदारों के साथ क़ाइम कर रहा हूँ यह है कि [13]मैं अपनी कमान बादलों में रखता हूँ। वह मेरे दुनिया के साथ अह्द का निशान होगा। [14]जब कभी मेरे कहने पर आसमान पर बादल छा जाएंगे और क़ौस-ए-क़ुज़ह उन में से नज़र आएगी [15]तो मैं यह अह्द याद करूँगा जो तुम्हारे और तमाम जानदारों के साथ किया गया है। अब कभी भी ऐसा सैलाब नहीं आएगा जो तमाम ज़िन्दगी को हलाक कर दे। [16]क़ौस-ए-क़ुज़ह नज़र आएगी तो मैं उसे देख कर उस दाइमी अह्द को याद करूँगा जो मेरे और दुनिया की तमाम जानदार मख़्लूक़ात के दरमियान है। [17]यह उस अह्द का निशान है जो मैं ने दुनिया के तमाम जानदारों के साथ किया है।"

6 इब्राहीम से अल्लाह का वादा

पैदाइश 12:1-8

[1]रब ने अब्राम से कहा, “अपने वतन, अपने रिश्तेदारों और अपने बाप
के घर को छोड़कर उस मुल्क में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा। [2]मैं तुझ
से एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा, तुझे बरकत दूँगा और तेरे नाम को बहुत
बढ़ाऊँगा। तू दूसरों के लिए बरकत का बाइस होगा। [3]जो तुझे बरकत
देंगे उन्हें मैं भी बरकत दूँगा। जो तुझ पर लानत करेगा उस पर मैं भी
लानत करूँगा। दुनिया की तमाम क़ौमें तुझ से बरकत पाएँगी।”

[4]अब्राम ने रब की सुनी और हारान से रवाना हुआ। लूत उस के साथ
था। उस वक़्त अब्राम 75 साल का था। [5]उस के साथ उस की बीवी
सारय और उस का भतीजा लूत थे। वह अपने नौकर-चाकरों समेत
अपनी पूरी मिलकियत भी साथ ले गया जो उस ने हारान में हासिल की
थी। चलते चलते वह कनआन पहुँचे। [6]अब्राम उस मुल्क में से गुज़र कर
सिकम के मक़ाम पर ठहर गया जहाँ मोरिह के बलूत का दरख़्त था।
उस ज़माने में मुल्क में कनआनी क़ौमें आबाद थीं।

[7]वहाँ रब अब्राम पर ज़ाहिर हुआ और उस से कहा, “मैं तेरी औलाद
को यह मुल्क दूँगा।” इस लिए उस ने वहाँ रब की ताज़ीम में क़ुर्बानगाह
बनाई जहाँ वह उस पर ज़ाहिर हुआ था। [8]वहाँ से वह उस पहाड़ी इलाक़े
की तरफ़ गया जो बैत-एल के मशरिक़ में है। वहाँ उस ने अपना ख़ैमा
लगाया। मग़रिब में बैत-एल था और मशरिक़ में अई। इस जगह पर
भी उस ने रब की ताज़ीम में क़ुर्बानगाह बनाई और रब का नाम ले कर
इबादत की।

पैदाइश 15:1-6

[1]इस के बाद रब रोया में अब्राम से हमकलाम हुआ, “अब्राम, मत डर।
मैं ही तेरी सिपर हूँ, मैं ही तेरा बहुत बड़ा अज्र हूँ।”

²लेकिन अब्राम ने एतिराज़ किया, “ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, तू मुझे क्या देगा जबकि अभी तक मेरे हाँ कोई बच्चा नहीं है और इलीअज़र दमिश्क़ी मेरी मीरास पाएगा। ³तू ने मुझे औलाद नहीं बख़्शी, इस लिए मेरे घराने का नौकर मेरा वारिस होगा।” ⁴तब अब्राम को अल्लाह से एक और कलाम मिला। “यह आदमी इलीअज़र तेरा वारिस नहीं होगा बल्कि तेरा अपना ही बेटा तेरा वारिस होगा।” ⁵रब ने उसे बाहर ले जा कर कहा, “आसमान की तरफ़ देख और सितारों को गिनने की कोशिश कर। तेरी औलाद इतनी ही बेशुमार होगी।”

⁶अब्राम ने रब पर भरोसा रखा। इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया।

7 इस्हाक़ की क़ुर्बानी

पैदाइश 22:1-19

¹कुछ अर्से के बाद अल्लाह ने इब्राहीम को आज़माया। उस ने उस से कहा, “इब्राहीम!” उस ने जवाब दिया, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” ²अल्लाह ने कहा, “अपने इक्लौते बेटे इस्हाक़ को जिसे तू प्यार करता है साथ ले कर मोरियाह के इलाक़े में चला जा। वहाँ मैं तुझे एक पहाड़ दिखाऊँगा। उस पर अपने बेटे को क़ुर्बान कर दे। उसे ज़बह करके क़ुर्बानगाह पर जला देना।”

³सुब्ह-सवेरे इब्राहीम उठा और अपने गधे पर ज़ीन कसा। उस ने अपने साथ दो नौकरों और अपने बेटे इस्हाक़ को लिया। फिर वह क़ुर्बानी को जलाने के लिए लकड़ी काट कर उस जगह की तरफ़ रवाना हुआ जो अल्लाह ने उसे बताई थी। ⁴सफ़र करते करते तीसरे दिन क़ुर्बानी की जगह इब्राहीम को दूर से नज़र आई। ⁵उस ने नौकरों से कहा, “यहाँ गधे के पास ठहरो। मैं लड़के के साथ वहाँ जा कर परस्तिश करूँगा। फिर हम तुम्हारे पास वापस आ जाएंगे।”

[6]इब्राहीम ने क़ुर्बानी को जलाने के लिए लकड़ियाँ इस्हाक़ के कंधों पर रख दीं और ख़ुद छुरी और आग जलाने के लिए अंगारों का बर्तन उठाया। दोनों चल दिए। [7]इस्हाक़ बोला, "अब्बू!" इब्राहीम ने कहा, "जी बेटा।" "अब्बू, आग और लकड़ियाँ तो हमारे पास हैं, लेकिन क़ुर्बानी के लिए भेड़ या बकरी कहाँ है?" [8]इब्राहीम ने जवाब दिया, "अल्लाह ख़ुद क़ुर्बानी के लिए जानवर मुहय्या करेगा, बेटा।" वह आगे बढ़ गए।

[9]चलते चलते वह उस मक़ाम पर पहुँचे जो अल्लाह ने उस पर ज़ाहिर किया था। इब्राहीम ने वहाँ क़ुर्बानगाह बनाई और उस पर लकड़ियाँ तरतीब से रख दीं। फिर उस ने इस्हाक़ को बांध कर लकड़ियों पर रख दिया [10]और छुरी पकड़ ली ताकि अपने बेटे को ज़बह करे। [11]ऐन उसी वक़्त रब के फ़रिश्ते ने आसमान पर से उसे आवाज़ दी, "इब्राहीम, इब्राहीम!" इब्राहीम ने कहा, "जी, मैं हाज़िर हूँ।" [12]फ़रिश्ते ने कहा, "अपने बेटे पर हाथ न चला, न उस के साथ कुछ कर। अब मैं ने जान लिया है कि तू अल्लाह का ख़ौफ़ रखता है, क्यूँकि तू अपने इक्लौते बेटे को भी मुझे देने के लिए तय्यार है।"

[13]अचानक इब्राहीम को एक मेंढा नज़र आया जिस के सींग गुंजान झाड़ियों में फंसे हुए थे। इब्राहीम ने उसे ज़बह करके अपने बेटे की जगह क़ुर्बानी के तौर पर जला दिया। [14]उस ने उस मक़ाम का नाम "रब मुहय्या करता है" रखा। इस लिए आज तक कहा जाता है, "रब के पहाड़ पर मुहय्या किया जाता है।"

[15]रब के फ़रिश्ते ने एक बार फिर आसमान पर से पुकार कर उस से बात की। [16]"रब का फ़रमान है, मेरी ज़ात की क़सम, चूँकि तू ने यह किया और अपने इक्लौते बेटे को मुझे पेश करने के लिए तय्यार था [17]इस लिए मैं तुझे बरकत दूँगा और तेरी औलाद को आसमान के सितारों और साहिल की रेत की तरह बेशुमार होने दूँगा। तेरी औलाद अपने दुश्मनों के शहरों के दरवाज़ों पर क़ब्ज़ा करेगी। [18]चूँकि तू ने मेरी सुनी इस लिए तेरी औलाद से दुनिया की तमाम क़ौमें बरकत पाएँगी।"

[19]इस के बाद इब्राहीम अपने नौकरों के पास वापस आया, और वह मिल कर बैर-सबा लौटे। वहाँ इब्राहीम आबाद रहा।

8 ईद-ए-फ़सह का वादा

ख़ुरूज 12:1-28

फ़सह की ईद

[1]फिर रब ने मिस्र में मूसा और हारून से कहा, [2]"अब से यह महीना तुम्हारे लिए साल का पहला महीना हो।" [3]इस्राईल की पूरी जमाअत को बताना कि इस महीने के दसवें दिन हर ख़ानदान का सरपरस्त अपने घराने के लिए लेला यानी भेड़ या बकरी का बच्चा हासिल करे। [4]अगर घराने के अफ़राद पूरा जानवर खाने के लिए कम हों तो वह अपने सब से क़रीबी पड़ोसी के साथ मिल कर लेला हासिल करें। इतने लोग उस में से खाएँ कि सब के लिए काफ़ी हो और पूरा जानवर खाया जाए। [5]इस के लिए एक साल का नर बच्चा चुन लेना जिस में नुक़्स न हो। वह भेड़ या बकरी का बच्चा हो सकता है।

[6]महीने के 14वें दिन तक उस की देख-भाल करो। उस दिन तमाम इस्राईली सूरज के ग़ुरूब होते वक़्त अपने लेले ज़बह करें। [7]हर ख़ानदान अपने जानवर का कुछ ख़ून जमा करके उसे उस घर के दरवाज़े की चौखट पर लगाए जहाँ लेला खाया जाएगा। यह ख़ून चौखट के ऊपर वाले हिस्से और दाएँ बाएँ के बाज़ूओं पर लगाया जाए। [8]लाज़िम है कि लोग जानवर को भून कर उसी रात खाएँ। साथ ही वह कड़वा साग-पात और बेख़मीरी रोटियाँ भी खाएँ। [9]लेले का गोश्त कच्चा न खाना, न उसे पानी में उबालना बल्कि पूरे जानवर को सर, पैरों और अन्दरूनी हिस्सों समेत आग पर भूनना। [10]लाज़िम है कि पूरा गोश्त उसी रात खाया जाए। अगर कुछ सुब्ह तक बच जाए तो उसे जलाना है। [11]खाना खाते वक़्त

ऐसा लिबास पहनना जैसे तुम सफ़र पर जा रहे हो। अपने जूते पहने रखना और हाथ में सफ़र के लिए लाठी लिए हुए तुम उसे जल्दी जल्दी खाना। रब के फ़सह की ईद यूँ मनाना।

[12]मैं आज रात मिस्र में से गुज़रूँगा और हर पहलौठे को जान से मार दूँगा, ख़्वाह इन्सान का हो या हैवान का। यूँ मैं जो रब हूँ मिस्र के तमाम देवताओं की अदालत करूँगा। [13]लेकिन तुम्हारे घरों पर लगा हुआ ख़ून तुम्हारा ख़ास निशान होगा। जिस जिस घर के दरवाज़े पर मैं वह ख़ून देखूँगा उसे छोड़ता जाऊँगा। जब मैं मिस्र पर हम्ला करूँगा तो मोहलक वबा तुम तक नहीं पहुँचेगी। [14]आज की रात को हमेशा याद रखना। इसे नस्ल-दर-नस्ल और हर साल रब की ख़ास ईद के तौर पर मनाना।

बेख़मीरी रोटी की ईद

[15]सात दिन तक बेख़मीरी रोटी खाना है। पहले दिन अपने घरों से तमाम ख़मीर निकाल देना। अगर कोई इन सात दिनों के दौरान ख़मीर खाए तो उसे क़ौम में से मिटाया जाए। [16]इस ईद के पहले और आख़िरी दिन मुक़द्दस इजतिमा मुनअक़िद करना। इन तमाम दिनों के दौरान काम न करना। सिर्फ़ एक काम की इजाज़त है और वह है अपना खाना तय्यार करना। [17]बेख़मीरी रोटी की ईद मनाना लाज़िम है, क्यूँकि उस दिन मैं तुम्हारे मुतअद्दिद ख़ानदानों को मिस्र से निकाल लाया। इस लिए यह दिन नस्ल-दर-नस्ल हर साल याद रखना। [18]पहले महीने के 14वें दिन की शाम से ले कर 21वें दिन की शाम तक सिर्फ़ बेख़मीरी रोटी खाना। [19]सात दिन तक तुम्हारे घरों में ख़मीर न पाया जाए। जो भी इस दौरान ख़मीर खाए उसे इस्राईल की जमाअत में से मिटाया जाए, ख़्वाह वह इस्राईली शहरी हो या अजनबी। [20]ग़रज़, इस ईद के दौरान ख़मीर न खाना। जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ बेख़मीरी रोटी ही खाना है।

पहलौठों की हलाकत

[21]फिर मूसा ने तमाम इस्राईली बुज़ुर्गों को बुला कर उन से कहा, “जाओ, अपने ख़ानदानों के लिए भेड़ या बकरी के बच्चे चुन कर उन्हें फ़सह की ईद के लिए ज़बह करो। [22]ज़ूफ़े का गुच्छा ले कर उसे ख़ून से भरे हुए बासन में डुबो देना। फिर उसे ले कर ख़ून को चौखट के ऊपर वाले हिस्से और दाएँ बाएँ के बाज़ूओं पर लगा देना। सुब्ह तक कोई अपने घर से न निकले। [23]जब रब मिस्रियों को मार डालने के लिए मुल्क में से गुज़रेगा तो वह चौखट के ऊपर वाले हिस्से और दाएँ बाएँ के बाज़ूओं पर लगा हुआ ख़ून देख कर उन घरों को छोड़ देगा। वह हलाक करने वाले फ़रिश्ते को इजाज़त नहीं देगा कि वह तुम्हारे घरों में जा कर तुम्हें हलाक करे।

[24]तुम अपनी औलाद समेत हमेशा इन हिदायात पर अमल करना। [25]यह रस्म उस वक़्त भी अदा करना जब तुम उस मुल्क में पहुँचोगे जो रब तुम्हें देगा। [26]और जब तुम्हारे बच्चे तुम से पूछें कि हम यह ईद क्यूँ मनाते हैं [27]तो उन से कहो, ‘यह फ़सह की क़ुर्बानी है जो हम रब को पेश करते हैं। क्यूँकि जब रब मिस्रियों को हलाक कर रहा था तो उस ने हमारे घरों को छोड़ दिया था’।”

यह सुन कर इस्राईलियों ने अल्लाह को सिज्दा किया। [28]फिर उन्हों ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा और हारून को बताया था।

9 दस अह्काम

ख़ुरूज 20:1-21

[1]तब अल्लाह ने यह तमाम बातें फ़रमाईं, [2]“मैं रब तेरा ख़ुदा हूँ जो तुझे मुल्क-ए-मिस्र की ग़ुलामी से निकाल लाया। [3]मेरे सिवा किसी और माबूद की परस्तिश न करना। [4]अपने लिए बुत न बनाना। किसी भी

चीज़ की मूरत न बनाना, चाहे वह आसमान में, ज़मीन पर या समुन्दर में हो। [5]न बुतों की परस्तिश, न उन की ख़िदमत करना, क्यूँकि मैं तेरा रब ग़यूर ख़ुदा हूँ। जो मुझ से नफ़रत करते हैं उन्हें मैं तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा दूँगा। [6]लेकिन जो मुझ से मुहब्बत रखते और मेरे अह्काम पूरे करते हैं उन पर मैं हज़ार पुश्तों तक मेहरबानी करूँगा।

[7]रब अपने ख़ुदा का नाम बेमक़्सद या ग़लत मक़्सद के लिए इस्तेमाल न करना। जो भी ऐसा करता है उसे रब सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ेगा।

[8]सबत के दिन का ख़याल रखना। उसे इस तरह मनाना कि वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो। [9]हफ़्ते के पहले छः दिन अपना काम-काज कर, [10]लेकिन सातवाँ दिन रब तेरे ख़ुदा का आराम का दिन है। उस दिन किसी तरह का काम न करना। न तू, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा नौकर, न तेरी नौकरानी और न तेरे मवेशी। जो परदेसी तेरे दरमियान रहता है वह भी काम न करे। [11]क्यूँकि रब ने पहले छः दिन में आसमान-ओ-ज़मीन, समुन्दर और जो कुछ उन में है बनाया लेकिन सातवें दिन आराम किया। इस लिए रब ने सबत के दिन को बरकत दे कर मुक़र्रर किया कि वह मख़्सूस और मुक़द्दस हो।

[12]अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना। फिर तू उस मुल्क में जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देने वाला है देर तक जीता रहेगा।

[13]क़त्ल न करना।

[14]ज़िना न करना।

[15]चोरी न करना।

[16]अपने पड़ोसी के बारे में झूटी गवाही न देना।

[17]अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना। न उस की बीवी का, न उस के नौकर का, न उस की नौकरानी का, न उस के बैल और न उस के गधे का बल्कि उस की किसी भी चीज़ का लालच न करना।”

लोग घबरा जाते हैं

[18]जब बाक़ी तमाम लोगों ने बादल की गरज और नरसिंगे की आवाज़ सुनी और बिजली की चमक और पहाड़ से उठते हुए धुएँ को देखा तो वह ख़ौफ़ के मारे काँपने लगे और पहाड़ से दूर खड़े हो गए। [19]उन्हों ने मूसा से कहा, "आप ही हम से बात करें तो हम सुनेंगे। लेकिन अल्लाह को हम से बात न करने दें वर्ना हम मर जाएंगे।" [20]लेकिन मूसा ने उन से कहा, "मत डरो, क्यूँकि रब तुम्हें जाँचने के लिए आया है, ताकि उस का ख़ौफ़ तुम्हारी आँखों के सामने रहे और तुम गुनाह न करो।" [21]लोग दूर ही रहे जबकि मूसा उस गहरी तारीकी के क़रीब गया जहाँ अल्लाह था।

10 क़ुर्बानी का इन्तिज़ाम

अहबार 4:1-35

[1]रब ने मूसा से कहा, [2]"इस्राईलियों को बताना कि जो भी ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म को तोड़े वह यह करे :

इमाम के लिए गुनाह की क़ुर्बानी

[3]अगर इमाम-ए-आज़म गुनाह करे और नतीजे में पूरी क़ौम क़ुसूरवार ठहरे तो फिर वह रब को एक बेऐब जवान बैल ले कर गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे। [4]वह जवान बैल को मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े के पास ले आए और अपना हाथ उस के सर पर रख कर उसे रब के सामने ज़बह करे। [5]फिर वह जानवर के ख़ून में से कुछ ले कर ख़ैमे में जाए। [6]वहाँ वह अपनी उंगली उस में डाल कर उसे सात बार रब के सामने यानी मुक़द्दसतरीन कमरे के पर्दे पर छिड़के। [7]फिर वह ख़ैमे के अन्दर की उस क़ुर्बानगाह के चारों सींगों पर ख़ून लगाए जिस पर बख़ूर

जलाया जाता है। बाक़ी ख़ून वह बाहर ख़ैमे के दरवाज़े पर की उस क़ुर्बानगाह के पाए पर उंडेले जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। [8]जवान बैल की सारी चर्बी, अंतड़ियों पर की सारी चर्बी, [9]गुर्दे उस चर्बी समेत जो उन पर और कमर के क़रीब होती है और जोड़कलेजी को गुर्दों के साथ ही अलग करना है। [10]यह बिलकुल उसी तरह किया जाए जिस तरह उस बैल के साथ किया गया जो सलामती की क़ुर्बानी के लिए पेश किया जाता है। इमाम यह सब कुछ उस क़ुर्बानगाह पर जला दे जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। [11]लेकिन वह उस की खाल, उस का सारा गोश्त, सर और पिंडलियाँ, अंतड़ियाँ और उन का गोबर [12]ख़ैमागाह के बाहर ले जाए। यह चीज़ें उस पाक जगह पर जहाँ क़ुर्बानियों की राख फेंकी जाती है लकड़ियों पर रख कर जला देनी हैं।

क़ौम के लिए गुनाह की क़ुर्बानी

[13]अगर इस्राईल की पूरी जमाअत ने ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म से तजावुज़ किया है और जमाअत को मालूम नहीं था तो भी वह क़ुसूरवार है। [14]जब लोगों को पता लगे कि हम ने गुनाह किया है तो जमाअत मुलाक़ात के ख़ैमे के पास एक जवान बैल ले आए और उसे गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे। [15]जमाअत के बुज़ुर्ग रब के सामने अपने हाथ उस के सर पर रखें, और वह वहीं ज़बह किया जाए। [16]फिर इमाम-ए-आज़म जानवर के ख़ून में से कुछ ले कर मुलाक़ात के ख़ैमे में जाए। [17]वहाँ वह अपनी उंगली उस में डाल कर उसे सात बार रब के सामने यानी मुक़द्दसतरीन कमरे के पर्दे पर छिड़के। [18]फिर वह ख़ैमे के अन्दर की उस क़ुर्बानगाह के चारों सींगों पर ख़ून लगाए जिस पर बख़ूर जलाया जाता है। बाक़ी ख़ून वह बाहर ख़ैमे के दरवाज़े की उस क़ुर्बानगाह के पाए पर उंडेले जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। [19]इस के बाद वह उस की तमाम चर्बी निकाल कर क़ुर्बानगाह पर जला दे। [20]उस बैल के साथ वह सब कुछ करे जो उसे अपने ज़ाती ग़ैरइरादी गुनाह के

लिए करना होता है। यूँ वह लोगों का कफ़्फ़ारा देगा और उन्हें मुआफ़ी मिल जाएगी। [21]आख़िर में वह बैल को ख़ैमागाह के बाहर ले जा कर उस तरह जला दे जिस तरह उसे अपने लिए बैल को जला देना होता है। यह जमाअत का गुनाह दूर करने की क़ुर्बानी है।

क़ौम के राहनुमा के लिए गुनाह की क़ुर्बानी

[22]अगर कोई सरदार ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म से तजावुज़ करे और यूँ क़ुसूरवार ठहरे तो [23]जब भी उसे पता लगे कि मुझ से गुनाह हुआ है तो वह क़ुर्बानी के लिए एक बेऐब बकरा ले आए। [24]वह अपना हाथ बकरे के सर पर रख कर उसे वहाँ ज़बह करे जहाँ भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ ज़बह की जाती हैं। यह गुनाह की क़ुर्बानी है। [25]इमाम अपनी उंगली ख़ून में डाल कर उसे उस क़ुर्बानगाह के चारों सींगों पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। बाक़ी ख़ून वह क़ुर्बानगाह के पाए पर उंडेले। [26]फिर वह उस की सारी चर्बी क़ुर्बानगाह पर उस तरह जला दे जिस तरह वह सलामती की क़ुर्बानियों की चर्बी जला देता है। यूँ इमाम उस आदमी का कफ़्फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी हासिल हो जाएगी।

आम लोगों के लिए गुनाह की क़ुर्बानी

[27]अगर कोई आम शख़्स ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म से तजावुज़ करे और यूँ क़ुसूरवार ठहरे तो [28]जब भी उसे पता लगे कि मुझ से गुनाह हुआ है तो वह क़ुर्बानी के लिए एक बेऐब बकरी ले आए। [29]वह अपना हाथ बकरी के सर पर रख कर उसे वहाँ ज़बह करे जहाँ भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ ज़बह की जाती हैं। [30]इमाम अपनी उंगली ख़ून में डाल कर उसे उस क़ुर्बानगाह के चारों सींगों पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। बाक़ी ख़ून वह क़ुर्बानगाह के पाए

पर उंडेले। [31]फिर वह उस की सारी चर्बी उस तरह निकाले जिस तरह वह सलामती की क़ुर्बानियों की चर्बी निकालता है। इस के बाद वह उसे क़ुर्बानगाह पर जला दे। ऐसी क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब को पसन्द है। यूँ इमाम उस आदमी का कफ़्फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी हासिल हो जाएगी।

[32]अगर वह गुनाह की क़ुर्बानी के लिए भेड़ का बच्चा लाना चाहे तो वह बेऐब मादा हो। [33]वह अपना हाथ उस के सर पर रख कर उसे वहाँ ज़बह करे जहाँ भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ ज़बह की जाती हैं। [34]इमाम अपनी उंगली ख़ून में डाल कर उसे उस क़ुर्बानगाह के चारों सींगों पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। बाक़ी ख़ून वह क़ुर्बानगाह के पाए पर उंडेले। [35]फिर वह उस की तमाम चर्बी उस तरह निकाले जिस तरह सलामती की क़ुर्बानी के लिए ज़बह किए गए जवान मेंढे की चर्बी निकाली जाती है। इस के बाद इमाम चर्बी को क़ुर्बानगाह पर उन क़ुर्बानियों समेत जला दे जो रब के लिए जलाई जाती हैं। यूँ इमाम उस आदमी का कफ़्फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

11 मौऊदा मसीह हमारे गुनाहों को उठाएगा

यसायाह 52:13-15

[13]देखो, मेरा ख़ादिम कामयाब होगा। वह सरबुलन्द, मुम्ताज़ और बहुत सरफ़राज़ होगा। [14]तुझे देख कर बहुतों के रोंगटे खड़े हो गए। क्यूँकि उस की शक्ल इतनी ख़राब थी, उस की सूरत किसी भी इन्सान से कहीं ज़्यादा बिगड़ी हुई थी। [15]लेकिन अब बहुत सी क़ौमें उसे देख कर हक्का-बक्का हो जाएँगी, बादशाह दम-ब-ख़ुद रह जाएंगे। क्यूँकि जो कुछ उन्हें नहीं बताया गया उसे वह देखेंगे, और जो कुछ उन्हों ने नहीं सुना उस की उन्हें समझ आएगी।

यसायाह बाब 53

1लेकिन कौन हमारे पैग़ाम पर ईमान लाया? और रब की क़ुदरत किस
पर ज़ाहिर हुई? 2उस के सामने वह कोंपल की तरह फूट निकला, उस
ताज़ा और मुलाइम शिगूफ़े की तरह जो ख़ुश्क ज़मीन में छुपी हुई जड़ से
निकल कर फलने फूलने लगती है। न वह ख़ूबसूरत था, न शानदार। हम
ने उसे देखा तो उस की शक्ल-ओ-सूरत में कुछ नहीं था जो हमें पसन्द
आता। 3उसे हक़ीर और मर्दूद समझा जाता था। दुख और बीमारियाँ
उस की साथी रहीं, और लोग यहाँ तक उस की तह्क़ीर करते थे कि उसे
देख कर अपना मुँह फेर लेते थे। हम उस की कुछ क़दर नहीं करते थे।
4लेकिन उस ने हमारी ही बीमारियाँ उठा लीं, हमारा ही दुख भुगत
लिया। तो भी हम समझे कि यह उस की मुनासिब सज़ा है, कि अल्लाह
ने ख़ुद उसे मार कर ख़ाक में मिला दिया है। 5लेकिन उसे हमारे ही जराइम
के सबब से छेदा गया, हमारे ही गुनाहों की ख़ातिर कुचला गया। उसे
सज़ा मिली ताकि हमें सलामती हासिल हो, और उसी के ज़ख़्मों से हमें
शिफ़ा मिली। 6हम सब भेड़-बकरियों की तरह आवारा फिर रहे थे, हर
एक ने अपनी अपनी राह इख़तियार की। लेकिन रब ने उसे हम सब के
क़ुसूर का निशाना बनाया।
7उस पर ज़ुल्म हुआ, लेकिन उस ने सब कुछ बर्दाश्त किया और अपना
मुँह न खोला, उस भेड़ की तरह जिसे ज़बह करने के लिए ले जाते हैं।
जिस तरह लेला बाल कतरने वालों के सामने ख़ामोश रहता है उसी तरह
उस ने अपना मुँह न खोला। 8उसे ज़ुल्म और अदालत के हाथ से छीन
लिया गया। अब कौन उस की नस्ल का ख़याल करेगा? क्यूँकि उस का
ज़िन्दों के मुल्क से ताल्लुक़ कट गया है। अपनी क़ौम के जुर्म के सबब
से वह सज़ा का निशाना बन गया। 9मुक़र्रर यह हुआ कि उस की क़ब्र
बेदीनों के पास हो, कि वह मरते वक़्त एक अमीर के पास दफ़नाया
जाए, गो न उस ने तशद्दुद किया, न उस के मुँह में फ़रेब था।

[10]लेकिन रब ही की मर्ज़ी थी कि उसे कुचला जाए। उसी ने उसे दुख का निशाना बनाया। और गो रब उस की जान के ज़रीए कफ़्फ़ारा देगा तो भी वह अपने फ़र्ज़न्दों को देखेगा। रब उस के दिनों में इज़ाफ़ा करेगा, और वह रब की मर्ज़ी को पूरा करने में कामयाब होगा। [11]इतनी तक्लीफ़ बर्दाश्त करने के बाद उसे फल नज़र आएगा, और वह सेर हो जाएगा। अपने इल्म से मेरा रास्त ख़ादिम बहुतों का इन्साफ़ क़ाइम करेगा, क्यूँकि वह उन के गुनाहों को अपने ऊपर उठा कर दूर कर देगा।

[12]इस लिए मैं उसे बड़ों में हिस्सा दूँगा, और वह ज़ोर-आवरों के साथ लूट का माल तक़्सीम करेगा। क्यूँकि उस ने अपनी जान को मौत के हवाले कर दिया, और उसे मुजरिमों में शुमार किया गया। हाँ, उस ने बहुतों का गुनाह उठा कर दूर कर दिया और मुजरिमों की शफ़ाअत की।

12 हज़रत ईसा की पैदाइश

लूक़ा 1:26-38

पैदाइश की पेशगोई

[26-27]इलीशिबा छः माह से उम्मीद से थी जब अल्लाह ने जिब्राईल फ़रिश्ते को एक कुंवारी के पास भेजा जो नासरत में रहती थी। नासरत गलील का एक शहर है और कुंवारी का नाम मरियम था। उस की मंगनी एक मर्द के साथ हो चुकी थी जो दाऊद बादशाह की नस्ल से था और जिस का नाम यूसुफ़ था। [28]फ़रिश्ते ने उस के पास आ कर कहा, “ऐ ख़ातून जिस पर रब का ख़ास फ़ज़्ल हुआ है, सलाम! रब तेरे साथ है।”

[29]मरियम यह सुन कर घबरा गई और सोचा, “यह किस तरह का सलाम है?” [30]लेकिन फ़रिश्ते ने अपनी बात जारी रखी और कहा, “ऐ मरियम, मत डर, क्यूँकि तुझ पर अल्लाह का फ़ज़्ल हुआ है। [31]तू उम्मीद से हो कर एक बेटे को जन्म देगी। तुझे उस का नाम ईसा (नजात देने

वाला) रखना है। [32]वह अज़ीम होगा और अल्लाह तआला का फ़र्ज़न्द
कहलाएगा। रब हमारा ख़ुदा उसे उस के बाप दाऊद के तख़्त पर बिठा-
एगा [33]और वह हमेशा तक इस्राईल पर हुकूमत करेगा। उस की सल्तनत
कभी ख़त्म न होगी।”

[34]मरियम ने फ़रिश्ते से कहा, “यह क्यूँकर हो सकता है? अभी तो मैं
कुंवारी हूँ।”

[35]फ़रिश्ते ने जवाब दिया, “रूह-उल-क़ुद्स तुझ पर नाज़िल होगा,
अल्लाह तआला की क़ुदरत का साया तुझ पर छा जाएगा। इस लिए यह
बच्चा क़ुद्दूस होगा और अल्लाह का फ़र्ज़न्द कहलाएगा। [36]और देख,
तेरी रिश्तेदार इलीशिबा के भी बेटा होगा हालाँकि वह उम्ररसीदा है। गो
उसे बाँझ क़रार दिया गया था, लेकिन वह छः माह से उम्मीद से है।
[37]क्यूँकि अल्लाह के नज़्दीक कोई काम नामुमकिन नहीं है।”

[38]मरियम ने जवाब दिया, “मैं रब की ख़िदमत के लिए हाज़िर हूँ। मेरे
साथ वैसा ही हो जैसा आप ने कहा है।” इस पर फ़रिश्ता चला गया।

लूक़ा 2:1-20

पैदाइश

[1]उन अय्याम में रोम के शहन्शाह औगुस्तुस ने फ़रमान जारी किया
कि पूरी सल्तनत की मर्दुमशुमारी की जाए। [2]यह पहली मर्दुमशुमारी उस
वक़्त हुई जब कूरिनियुस शाम का गवर्नर था। [3]हर किसी को अपने वतनी
शहर में जाना पड़ा ताकि वहाँ रजिस्टर में अपना नाम दर्ज करवाए।
[4]चुनाँचे यूसुफ़ गलील के शहर नासरत से रवाना हो कर यहूदिया के
शहर बैत-लहम पहुँचा। वजह यह थी कि वह दाऊद बादशाह के घराने
और नस्ल से था, और बैत-लहम दाऊद का शहर था। [5]चुनाँचे वह अपने
नाम को रजिस्टर में दर्ज करवाने के लिए वहाँ गया। उस की मंगेतर
मरियम भी साथ थी। उस वक़्त वह उम्मीद से थी। [6]जब वह वहाँ ठहरे

हुए थे तो बच्चे को जन्म देने का वक़्त आ पहुँचा। 7बेटा पैदा हुआ। यह मरियम का पहला बच्चा था। उस ने उसे कपड़ों में लपेट कर एक चरनी में लिटा दिया, क्यूँकि उन्हें सराय में रहने की जगह नहीं मिली थी।

चरवाहों को ख़ुशख़बरी

8उस रात कुछ चरवाहे क़रीब के खुले मैदान में अपने रेवड़ों की पह-
रादारी कर रहे थे। 9अचानक रब का एक फ़रिश्ता उन पर ज़ाहिर हुआ,
और उन के इर्दगिर्द रब का जलाल चमका। यह देख कर वह सख़्त डर
गए। 10लेकिन फ़रिश्ते ने उन से कहा, "डरो मत! देखो मैं तुम को बड़ी
ख़ुशी की ख़बर देता हूँ जो तमाम लोगों के लिए होगी। 11आज ही दाऊद
के शहर में तुम्हारे लिए नजातदहिन्दा पैदा हुआ है यानी मसीह ख़ुदावन्द।
12और तुम उसे इस निशान से पहचान लोगे, तुम एक शीरख़्वार बच्चे
को कपड़ों में लिपटा हुआ पाओगे। वह चरनी में पड़ा हुआ होगा।"

13अचानक आसमानी लश्करों के बेशुमार फ़रिश्ते उस फ़रिश्ते के साथ ज़ाहिर हुए जो अल्लाह की हम्द-ओ-सना करके कह रहे थे,

14"आसमान की बुलन्दियों पर अल्लाह की इज़्ज़त-ओ-जलाल, ज़मीन पर उन लोगों की सलामती जो उसे मन्ज़ूर हैं।"

15फ़रिश्ते उन्हें छोड़ कर आसमान पर वापस चले गए तो चरवाहे आपस में कहने लगे, "आओ, हम बैत-लहम जा कर यह बात देखें जो हुई है और जो रब ने हम पर ज़ाहिर की है।"

16वह भाग कर बैत-लहम पहुँचे। वहाँ उन्हें मरियम और यूसुफ़ मिले
और साथ ही छोटा बच्चा जो चरनी में पड़ा हुआ था। 17यह देख कर उन्हों
ने सब कुछ बयान किया जो उन्हें इस बच्चे के बारे में बताया गया था।
18जिस ने भी उन की बात सुनी वह हैरतज़दा हुआ। 19लेकिन मरियम
को यह तमाम बातें याद रहीं और वह अपने दिल में उन पर ग़ौर करती
रही।

[20]फिर चरवाहे लौट गए और चलते चलते उन तमाम बातों के लिए अल्लाह की ताज़ीम-ओ-तारीफ़ करते रहे जो उन्हों ने सुनी और देखी थीं, क्यूँकि सब कुछ वैसा ही पाया था जैसा फ़रिश्ते ने उन्हें बताया था।

13 हज़रत ईसा का बपतिस्मा

मत्ती बाब 3

यहया बपतिस्मा देने वाले की ख़िदमत

[1]उन दिनों में यहया बपतिस्मा देने वाला आया और यहूदिया के रेगि-
स्तान में एलान करने लगा, [2]“तौबा करो, क्यूँकि आसमान की बादशाही
क़रीब आ गई है।” [3]यहया वही है जिस के बारे में यसायाह नबी ने फ़र-
माया, ‘रेगिस्तान में एक आवाज़ पुकार रही है, रब की राह तय्यार करो!
उस के रास्ते सीधे बनाओ।’

[4]यहया ऊँटों के बालों का लिबास पहने और कमर पर चमड़े का पटका
बांधे रहता था। ख़ुराक के तौर पर वह टिड्डियाँ और जंगली शहद खाता
था। [5]लोग यरूशलम, पूरे यहूदिया और दरया-ए-यर्दन के पूरे इलाक़े से
निकल कर उस के पास आए। [6]और अपने गुनाहों को तस्लीम करके
उन्हों ने दरया-ए- यर्दन में यहया से बपतिस्मा लिया।

[7]बहुत से फ़रीसी और सदूक़ी भी वहाँ आए जहाँ वह बपतिस्मा दे रहा
था। उन्हें देख कर उस ने कहा, “ऐ ज़हरीले साँप के बच्चो! किस ने तुम्हें
आने वाले ग़ज़ब से बचने की हिदायत की? [8]अपनी ज़िन्दगी से ज़ाहिर
करो कि तुम ने वाक़ई तौबा की है। [9]यह ख़याल मत करो कि हम तो बच
जाएंगे क्यूँकि इब्राहीम हमारा बाप है। मैं तुम को बताता हूँ कि अल्लाह
इन पत्थरों से भी इब्राहीम के लिए औलाद पैदा कर सकता है। [10]अब
तो अदालत की कुल्हाड़ी दरख़्तों की जड़ों पर रखी हुई है। हर दरख़्त
जो अच्छा फल न लाए काटा और आग में झोंका जाएगा। [11]मैं तो तुम

तौबा करने वालों को पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन एक आने वाला है जो मुझ से बड़ा है। मैं उस के जूतों को उठाने के भी लाइक़ नहीं। वह तुम्हें रूह-उल-क़ुद्स और आग से बपतिस्मा देगा। [12]वह हाथ में छाज पकड़े हुए अनाज को भूसे से अलग करने के लिए तय्यार खड़ा है। वह गाहने की जगह बिलकुल साफ़ करके अनाज को अपने गोदाम में जमा करेगा। लेकिन भूसे को वह ऐसी आग में झोंकेगा जो बुझने की नहीं।"

हज़रत ईसा का बपतिस्मा

[13]फिर ईसा गलील से दरया-ए-यर्दन के किनारे आया ताकि यहया से बपतिस्मा ले। [14]लेकिन यहया ने उसे रोकने की कोशिश करके कहा, "मुझे तो आप से बपतिस्मा लेने की ज़रूरत है, तो फिर आप मेरे पास क्यूँ आए हैं?"

[15]ईसा ने जवाब दिया, "अब होने ही दे, क्यूँकि मुनासिब है कि हम यह करते हुए अल्लाह की रास्त मर्ज़ी पूरी करें।" इस पर यहया मान गया।

[16]बपतिस्मा लेने पर ईसा फ़ौरन पानी से निकला। उसी लम्हे आसमान खुल गया और उस ने अल्लाह के रूह को देखा जो कबूतर की तरह उतर कर उस पर ठहर गया। [17]साथ साथ आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, "यह मेरा प्यारा फ़र्ज़न्द है, इस से मैं ख़ुश हूँ।"

यूहन्ना 1:29-34

अल्लाह का लेला

[29]अगले दिन यहया ने ईसा को अपने पास आते देखा। उस ने कहा, "देखो, यह अल्लाह का लेला है जो दुनिया का गुनाह उठा ले जाता है। [30]यह वही है जिस के बारे में मैं ने कहा, 'एक मेरे बाद आने वाला है जो मुझ से बड़ा है, क्यूँकि वह मुझ से पहले था।' [31]मैं तो उसे नहीं जानता

था, लेकिन मैं इस लिए आ कर पानी से बपतिस्मा देने लगा ताकि वह इस्राईल पर ज़ाहिर हो जाए।"

[32] और यहया ने यह गवाही दी, "मैं ने देखा कि रूह-उल-क़ुद्स कबूतर की तरह आसमान पर से उतर कर उस पर ठहर गया। [33] मैं तो उसे नहीं जानता था, लेकिन जब अल्लाह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए भेजा तो उस ने मुझे बताया, 'तू देखेगा कि रूह-उल-क़ुद्स उतर कर किसी पर ठहर जाएगा। यह वही होगा जो रूह-उल-क़ुद्स से बपतिस्मा देगा।'
[34] अब मैं ने देखा है और गवाही देता हूँ कि यह अल्लाह का फ़र्ज़न्द है।"

14 उल-मसीह को आज़माया जाता है

मत्ती 4:1-11

[1] फिर रूह-उल-क़ुद्स ईसा को रेगिस्तान में ले गया ताकि उसे इब्लीस से आज़माया जाए। [2] चालीस दिन और चालीस रात रोज़ा रखने के बाद उसे आख़िरकार भूक लगी। [3] फिर आज़माने वाला उस के पास आ कर कहने लगा, "अगर तू अल्लाह का फ़र्ज़न्द है तो इन पत्थरों को हुक्म दे कि रोटी बन जाएँ।"

[4] लेकिन ईसा ने इन्कार करके कहा, "हरगिज़ नहीं, क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है कि इन्सान की ज़िन्दगी सिर्फ़ रोटी पर मुन्हसिर नहीं होती बल्कि हर उस बात पर जो रब के मुँह से निकलती है।"

[5] इस पर इब्लीस ने उसे मुक़द्दस शहर यरूशलम ले जा कर बैत-उल-मुक़द्दस की सब से ऊँची जगह पर खड़ा किया और कहा, [6] "अगर तू अल्लाह का फ़र्ज़न्द है तो यहाँ से छलाँग लगा दे। क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, 'वह तेरी ख़ातिर अपने फ़रिश्तों को हुक्म देगा, और वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि तेरे पाँओ को पत्थर से ठेस न लगे'।"

[7]लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “कलाम-ए-मुक़द्दस यह भी फ़रमाता है, ‘रब अपने ख़ुदा को न आज़माना’।”

[8]फिर इब्लीस ने उसे एक निहायत ऊँचे पहाड़ पर ले जा कर उसे दुनिया के तमाम ममालिक और उन की शान-ओ-शौकत दिखाई। [9]वह बोला, “यह सब कुछ मैं तुझे दे दूँगा, शर्त यह है कि तू गिर कर मुझे सिज्दा करे।”

[10]लेकिन ईसा ने तीसरी बार इन्कार किया और कहा, “इब्लीस, दफ़ा हो जा! क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस में यूँ लिखा है, ‘रब अपने ख़ुदा को सिज्दा कर और सिर्फ़ उसी की इबादत कर’।”

[11]इस पर इब्लीस उसे छोड़ कर चला गया और फ़रिश्ते आ कर उस की ख़िदमत करने लगे।

15 हज़रत ईसा और नीकदीमस

यूहन्ना 3:1-21

[1]फ़रीसी फ़िर्क़े का एक आदमी बनाम नीकुदेमुस था जो यहूदी अदालत-ए-आलिया का रुकन था। [2]वह रात के वक़्त ईसा के पास आया और कहा, “उस्ताद, हम जानते हैं कि आप ऐसे उस्ताद हैं जो अल्लाह की तरफ़ से आए हैं, क्यूँकि जो इलाही निशान आप दिखाते हैं वह सिर्फ़ ऐसा शख़्स ही दिखा सकता है जिस के साथ अल्लाह हो।”

[3]ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे सच बताता हूँ, सिर्फ़ वह शख़्स अल्लाह की बादशाही को देख सकता है जो नए सिरे से पैदा हुआ हो।”

[4]नीकुदेमुस ने एतिराज़ किया, “क्या मतलब? बूढ़ा आदमी किस तरह नए सिरे से पैदा हो सकता है? क्या वह दुबारा अपनी माँ के पेट में जा कर पैदा हो सकता है?”

[5]ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे सच बताता हूँ, सिर्फ़ वह शख़्स अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हो सकता है जो पानी और रूह से पैदा हुआ

हो। 6जो कुछ जिस्म से पैदा होता है वह जिस्मानी है, लेकिन जो रूह से
पैदा होता है वह रुहानी है। 7इस लिए तू ताज्जुब न कर कि मैं कहता
हूँ, 'तुम्हें नए सिरे से पैदा होना ज़रूर है।' 8हवा जहाँ चाहे चलती है। तू
उस की आवाज़ तो सुनता है, लेकिन यह नहीं जानता कि कहाँ से आती
और कहाँ को जाती है। यही हालत हर उस शख़्स की है जो रूह से पैदा
हुआ है।"

9नीकुदेमुस ने पूछा, "यह किस तरह हो सकता है?"

10ईसा ने जवाब दिया, "तू तो इस्राईल का उस्ताद है। क्या इस के
बावुजूद भी यह बातें नहीं समझता? 11मैं तुझ को सच बताता हूँ, हम
वह कुछ बयान करते हैं जो हम जानते हैं और उस की गवाही देते हैं जो
हम ने ख़ुद देखा है। तो भी तुम लोग हमारी गवाही क़बूल नहीं करते। 12मैं
ने तुम को दुनियावी बातें सुनाई हैं और तुम उन पर ईमान नहीं रखते।
तो फिर तुम क्यूँकर ईमान लाओगे अगर तुम्हें आसमानी बातों के बारे में
बताऊँ? 13आसमान पर कोई नहीं चढ़ा सिवाए इब्न-ए-आदम के, जो
आसमान से उतरा है।

14और जिस तरह मूसा ने रेगिस्तान में साँप को लकड़ी पर लटका
कर ऊँचा कर दिया उसी तरह ज़रूर है कि इब्न-ए-आदम को भी ऊँचे
पर चढ़ाया जाए, 15ताकि हर एक को जो उस पर ईमान लाएगा अबदी
ज़िन्दगी मिल जाए। 16क्यूँकि अल्लाह ने दुनिया से इतनी मुहब्बत रखी
कि उस ने अपने इक्लौते फ़र्ज़न्द को बख़्श दिया, ताकि जो भी उस पर
ईमान लाए हलाक न हो बल्कि अबदी ज़िन्दगी पाए। 17क्यूँकि अल्लाह
ने अपने फ़र्ज़न्द को इस लिए दुनिया में नहीं भेजा कि वह दुनिया को
मुजरिम ठहराए बल्कि इस लिए कि वह उसे नजात दे।

18जो भी उस पर ईमान लाया है उसे मुजरिम नहीं क़रार दिया जाएगा,
लेकिन जो ईमान नहीं रखता उसे मुजरिम ठहराया जा चुका है। वजह
यह है कि वह अल्लाह के इक्लौते फ़र्ज़न्द के नाम पर ईमान नहीं लाया।
19और लोगों को मुजरिम ठहराने का सबब यह है कि गो अल्लाह का नूर

इस दुनिया में आया, लेकिन लोगों ने नूर की निस्बत अंधेरे को ज़्यादा प्यार किया, क्यूँकि उन के काम बुरे थे। [20]जो भी ग़लत काम करता है वह नूर से दुश्मनी रखता है और उस के क़रीब नहीं आता ताकि उस के बुरे कामों का पोल न खुल जाए। [21]लेकिन जो सच्चा काम करता है वह नूर के पास आता है ताकि ज़ाहिर हो जाए कि उस के काम अल्लाह के वसीले से हुए हैं।"

16 हज़रत ईसा और सामरी औरत

यूहन्ना 4:1-26, 39-42

[1]फ़रीसियों को इत्तिला मिली कि ईसा यहया की निस्बत ज़्यादा शागिर्द बना रहा और लोगों को बपतिस्मा दे रहा है, [2]हालाँकि वह ख़ुद बपतिस्मा नहीं देता था बल्कि उस के शागिर्द। [3]जब ख़ुदावन्द ईसा को यह बात मालूम हुई तो वह यहूदिया को छोड़ कर गलील को वापस चला गया। [4]वहाँ पहुँचने के लिए उसे सामरिया में से गुज़रना था।

[5]चलते चलते वह एक शहर के पास पहुँच गया जिस का नाम सूख़ार था। यह उस ज़मीन के क़रीब था जो याक़ूब ने अपने बेटे यूसुफ़ को दी थी। [6]वहाँ याक़ूब का कुआँ था। ईसा सफ़र से थक गया था, इस लिए वह कुएँ पर बैठ गया। दोपहर के तक़रीबन बारह बज गए थे।

[7]एक सामरी औरत पानी भरने आई। ईसा ने उस से कहा, "मुझे ज़रा पानी पिला।" [8](उस के शागिर्द खाना ख़रीदने के लिए शहर गए हुए थे।)

[9]सामरी औरत ने ताज्जुब किया, क्यूँकि यहूदी सामरियों के साथ ताल्लुक़ रखने से इन्कार करते हैं। उस ने कहा, "आप तो यहूदी हैं, और मैं सामरी औरत हूँ। आप किस तरह मुझ से पानी पिलाने की दरख़्वास्त कर सकते हैं?"

[10]ईसा ने जवाब दिया, “अगर तू उस बख़्शिश से वाक़िफ़ होती जो अल्लाह तुझ को देना चाहता है और तू उसे जानती जो तुझ से पानी माँग रहा है तो तू उस से माँगती और वह तुझे ज़िन्दगी का पानी देता।”

[11]ख़ातून ने कहा, “ख़ुदावन्द, आप के पास तो बाल्टी नहीं है और यह कुआँ गहरा है। आप को ज़िन्दगी का यह पानी कहाँ से मिला? [12]क्या आप हमारे बाप याक़ूब से बड़े हैं जिस ने हमें यह कुआँ दिया और जो ख़ुद भी अपने बेटों और रेवड़ों समेत उस के पानी से लुत्फ़अन्दोज़ हुआ?”

[13]ईसा ने जवाब दिया, “जो भी इस पानी में से पिए उसे दुबारा प्यास लगेगी। [14]लेकिन जिसे मैं पानी पिला दूँ उसे बाद में कभी भी प्यास नहीं लगेगी। बल्कि जो पानी मैं उसे दूँगा वह उस में एक चश्मा बन जाएगा जिस से पानी फूट कर अबदी ज़िन्दगी मुहय्या करेगा।”

[15]औरत ने उस से कहा, “ख़ुदावन्द, मुझे यह पानी पिला दें। फिर मुझे कभी भी प्यास नहीं लगेगी और मुझे बार बार यहाँ आ कर पानी भरना नहीं पड़ेगा।”

[16]ईसा ने कहा, “जा, अपने ख़ावन्द को बुला ला।”

[17]औरत ने जवाब दिया, “मेरा कोई ख़ावन्द नहीं है।” ईसा ने कहा, “तू ने सहीह कहा कि मेरा ख़ावन्द नहीं है, [18]क्यूँकि तेरी शादी पाँच मर्दों से हो चुकी है और जिस आदमी के साथ तू अब रह रही है वह तेरा शौहर नहीं है। तेरी बात बिलकुल दुरुस्त है।”

[19]औरत ने कहा, “ख़ुदावन्द, मैं देखती हूँ कि आप नबी हैं। [20]हमारे बापदादा तो इसी पहाड़ पर इबादत करते थे जबकि आप यहूदी लोग इसरार करते हैं कि यरूशलम वह मर्कज़ है जहाँ हमें इबादत करनी है।”

[21]ईसा ने जवाब दिया, “ऐ ख़ातून, यक़ीन जान कि वह वक़्त आएगा जब तुम न तो इस पहाड़ पर बाप की इबादत करोगे, न यरूशलम में। [22]तुम सामरी उस की परस्तिश करते हो जिसे नहीं जानते। इस के मुक़ाबले में हम उस की परस्तिश करते हैं जिसे जानते हैं, क्यूँकि नजात यहूदियों में से है। [23]लेकिन वह वक़्त आ रहा है बल्कि पहुँच चुका है जब

हक़ीक़ी परस्तार रूह और सच्चाई से बाप की परस्तिश करेंगे, क्यूँकि बाप ऐसे ही परस्तार चाहता है। [24]अल्लाह रूह है, इस लिए लाज़िम है कि उस के परस्तार रूह और सच्चाई से उस की परस्तिश करें।”

[25]औरत ने उस से कहा, “मुझे मालूम है कि मसीह यानी मसह किया हुआ शख़्स आ रहा है। जब वह आएगा तो हमें सब कुछ बता देगा।”

[26]इस पर ईसा ने उसे बताया, “मैं ही मसीह हूँ जो तेरे साथ बात कर रहा हूँ।”

[39]उस शहर के बहुत से सामरी ईसा पर ईमान लाए। वजह यह थी कि उस औरत ने उस के बारे में यह गवाही दी थी, “उस ने मुझे सब कुछ बता दिया जो मैं ने किया है।” [40]जब वह उस के पास आए तो उन्हों ने मिन्नत की, “हमारे पास ठहरें।” चुनाँचे वह दो दिन वहाँ रहा।

[41]और उस की बातें सुन कर मज़ीद बहुत से लोग ईमान लाए। [42]उन्हों ने औरत से कहा, “अब हम तेरी बातों की बिना पर ईमान नहीं रखते बल्कि इस लिए कि हम ने ख़ुद सुन और जान लिया है कि वाक़ई दुनिया का नजातदहिन्दा यही है।”

17 हज़रत ईसा मुआफ़ करते और शिफ़ा देते हैं

लूक़ा 5:17-26

[17]एक दिन वह लोगों को तालीम दे रहा था। फ़रीसी और शरीअत के आलिम भी गलील और यहूदिया के हर गाँव और यरूशलम से आ कर उस के पास बैठे थे। और रब की क़ुदरत उसे शिफ़ा देने के लिए तहरीक दे रही थी। [18]इतने में कुछ आदमी एक मफ़्लूज को चारपाई पर डाल कर वहाँ पहुँचे। उन्हों ने उसे घर के अन्दर ईसा के सामने रखने की कोशिश की, [19]लेकिन बेफ़ाइदा। घर में इतने लोग थे कि अन्दर जाना नामुमकिन था। इस लिए वह आख़िरकार छत पर चढ़ गए और कुछ टायलें उधेड़ कर छत का एक हिस्सा खोल दिया। फिर उन्हों ने चारपाई को मफ़्लूज

समेत हुजूम के दरमियान ईसा के सामने उतारा। [20]जब ईसा ने उन का ईमान देखा तो उस ने मफ़्लूज से कहा, "ऐ आदमी, तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं।"

[21]यह सुन कर शरीअत के आलिम और फ़रीसी सोच-बिचार में पड़ गए, "यह किस तरह का बन्दा है जो इस क़िस्म का कुफ़्र बकता है? सिर्फ़ अल्लाह ही गुनाह मुआफ़ कर सकता है।"

[22]लेकिन ईसा ने जान लिया कि यह क्या सोच रहे हैं, इस लिए उस ने पूछा, "तुम दिल में इस तरह की बातें क्यूँ सोच रहे हो? [23]क्या मफ़्लूज से यह कहना ज़्यादा आसान है कि 'तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं' या यह कि 'उठ कर चल फिर'? [24]लेकिन मैं तुम को दिखाता हूँ कि इब्न-ए-आदम को वाक़ई दुनिया में गुनाह मुआफ़ करने का इख़तियार है।" यह कह कर वह मफ़्लूज से मुख़ातिब हुआ, "उठ, अपनी चारपाई उठा कर अपने घर चला जा।"

[25]लोगों के देखते देखते वह आदमी खड़ा हुआ और अपनी चारपाई उठा कर अल्लाह की हम्द-ओ-सना करते हुए अपने घर चला गया। [26]यह देख कर सब सख़्त हैरतज़दा हुए और अल्लाह की तम्जीद करने लगे। उन पर ख़ौफ़ छा गया और वह कह उठे, "आज हम ने नाक़ाबिल-ए-यक़ीन बातें देखी हैं।"

18 हज़रत ईसा तूफ़ान को थमा देते हैं

मर्क़ुस 4:35-41

[35]उस दिन जब शाम हुई तो ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, "आओ, हम झील के पार चलें।" [36]चुनाँचे वह भीड़ को रुख़सत करके उसे ले कर चल पड़े। बाज़ और कश्तियाँ भी साथ गईं। [37]अचानक सख़्त आँधी आई। लहरें कश्ती से टकरा कर उसे पानी से भरने लगीं, [38]लेकिन ईसा अभी तक कश्ती के पिछले हिस्से में अपना सर गद्दी पर रखे सो रहा

था। शागिर्दों ने उसे जगा कर कहा, “उस्ताद, क्या आप को परवा नहीं कि हम तबाह हो रहे हैं?”

[39]वह जाग उठा, आँधी को डाँटा और झील से कहा, “ख़ामोश! चुप कर!” इस पर आँधी थम गई और लहरें बिलकुल साकित हो गईं। [40]फिर ईसा ने शागिर्दों से पूछा, “तुम क्यूँ घबराते हो? क्या तुम अभी तक ईमान नहीं रखते?” [41]उन पर सख़्त ख़ौफ़ तारी हो गया और वह एक दूसरे से कहने लगे, “आख़िर यह कौन है? हवा और झील भी उस का हुक्म मानती हैं।”

19 हज़रत ईसा बदरूहों को निकाल देते हैं

मर्क़ुस 5:1-20

[1]फिर वह झील के पार गरासा के इलाक़े में पहुँचे। [2]जब ईसा कश्ती से उतरा तो एक आदमी जो नापाक रूह की गिरिफ़्त में था क़ब्रों में से निकल कर ईसा को मिला। [3]यह आदमी क़ब्रों में रहता और इस नौबत तक पहुँच गया था कि कोई भी उसे बांध न सकता था, चाहे उसे ज़न्जीरों से भी बांधा जाता। [4]उसे बहुत दफ़ा बेड़ियों और ज़न्जीरों से बांधा गया था, लेकिन जब भी ऐसा हुआ तो उस ने ज़न्जीरों को तोड़ कर बेड़ियों को टुकड़े टुकड़े कर दिया था। कोई भी उसे कंट्रोल नहीं कर सकता था। [5]दिन रात वह चीख़ें मार मार कर क़ब्रों और पहाड़ी इलाक़े में घूमता फिरता और अपने आप को पत्थरों से ज़ख़्मी कर लेता था।

[6]ईसा को दूर से देख कर वह दौड़ा और उस के सामने मुँह के बल गिरा। [7]वह ज़ोर से चीख़ा, “ऐ ईसा अल्लाह तआला के फ़र्ज़न्द, मेरा आप के साथ क्या वास्ता है? अल्लाह के नाम में आप को क़सम देता हूँ कि मुझे अज़ाब में न डालें।” [8]क्यूँकि ईसा ने उसे कहा था, “ऐ नापाक रूह, आदमी में से निकल जा!”

[9]फिर ईसा ने पूछा, “तेरा नाम क्या है?”

उस ने जवाब दिया, “लश्कर, क्यूँकि हम बहुत से हैं।” 10 और वह बार
बार मिन्नत करता रहा कि ईसा उन्हें इस इलाक़े से न निकाले।

11 उस वक़्त क़रीब की पहाड़ी पर सूअरों का बड़ा ग़ोल चर रहा था।
12 बदरूहों ने ईसा से इल्तिमास की, “हमें सूअरों में भेज दें, हमें उन में
दाख़िल होने दें।” 13 उस ने उन्हें इजाज़त दी तो बदरुहें उस आदमी में से
निकल कर सूअरों में जा घुसीं। इस पर पूरे ग़ोल के तक़रीबन 2,000
सूअर भाग भाग कर पहाड़ी की ढलान पर से उतरे और झील में झपट
कर डूब मरे।

14 यह देख कर सूअरों के गल्लाबान भाग गए। उन्हों ने शहर और
दीहात में इस बात का चर्चा किया तो लोग यह मालूम करने के लिए कि
क्या हुआ है अपनी जगहों से निकल कर ईसा के पास आए। 15 उस के
पास पहुँचे तो वह आदमी मिला जिस में पहले बदरूहों का लश्कर था।
अब वह कपड़े पहने वहाँ बैठा था और उस की ज़हनी हालत ठीक थी।
यह देख कर वह डर गए। 16 जिन्हों ने सब कुछ देखा था उन्हों ने लोगों
को बताया कि बदरुह-गिरिफ़्ता आदमी और सूअरों के साथ क्या हुआ
है।

17 फिर लोग ईसा की मिन्नत करने लगे कि वह उन के इलाक़े से चला
जाए।

18 ईसा कश्ती पर सवार होने लगा तो बदरूहों से आज़ाद किए गए
आदमी ने उस से इल्तिमास की, “मुझे भी अपने साथ जाने दें।”

19 लेकिन ईसा ने उसे साथ जाने न दिया बल्कि कहा, “अपने घर
वापस चला जा और अपने अज़ीज़ों को सब कुछ बता जो रब ने तेरे
लिए किया है, कि उस ने तुझ पर कितना रहम किया है।”

20 चुनाँचे आदमी चला गया और दिकपुलिस के इलाक़े में लोगों को
बताने लगा कि ईसा ने मेरे लिए क्या कुछ किया है। और सब हैरतज़दा
हुए।

20 हज़रत ईसा लाज़र को ज़िन्दा कर देते हैं

यूहन्ना 11:1-44

लाज़र की मौत

[1]उन दिनों में एक आदमी बीमार पड़ गया जिस का नाम लाज़र था। वह अपनी बहनों मरियम और मर्था के साथ बैत-अनियाह में रहता था। [2]यह वही मरियम थी जिस ने बाद में ख़ुदावन्द पर ख़ुश्बू उंडेल कर उस के पाँओ अपने बालों से ख़ुश्क किए थे। उसी का भाई लाज़र बीमार था। [3]चुनाँचे बहनों ने ईसा को इत्तिला दी, "ख़ुदावन्द, जिसे आप प्यार करते हैं वह बीमार है।"

[4]जब ईसा को यह ख़बर मिली तो उस ने कहा, "इस बीमारी का अन्जाम मौत नहीं है, बल्कि यह अल्लाह के जलाल के वास्ते हुआ है, ताकि इस से अल्लाह के फ़र्ज़न्द को जलाल मिले।"

[5]ईसा मर्था, मरियम और लाज़र से मुहब्बत रखता था। [6]तो भी वह लाज़र के बारे में इत्तिला मिलने के बाद दो दिन और वहीं ठहरा। [7]फिर उस ने अपने शागिर्दों से बात की, "आओ, हम दुबारा यहूदिया चले जाएँ।"

[8]शागिर्दों ने एतिराज़ किया, "उस्ताद, अभी अभी वहाँ के यहूदी आप को संगसार करने की कोशिश कर रहे थे, फिर भी आप वापस जाना चाहते हैं?"

[9]ईसा ने जवाब दिया, "क्या दिन में रौशनी के बारह घंटे नहीं होते? जो शख़्स दिन के वक़्त चलता फिरता है वह किसी भी चीज़ से नहीं टकराएगा, क्यूँकि वह इस दुनिया की रौशनी के ज़रीए देख सकता है। [10]लेकिन जो रात के वक़्त चलता है वह चीज़ों से टकरा जाता है, क्यूँकि उस के पास रौशनी नहीं है।" [11]फिर उस ने कहा, "हमारा दोस्त लाज़र सो गया है। लेकिन मैं जा कर उसे जगा दूँगा।"

[12]शागिर्दों ने कहा, "ख़ुदावन्द, अगर वह सो रहा है तो वह बच जा-एगा।"

[13]उन का ख़याल था कि ईसा लाज़र की फ़ित्री नींद का ज़िक्र कर रहा है जबकि हक़ीक़त में वह उस की मौत की तरफ़ इशारा कर रहा था। [14]इस लिए उस ने उन्हें साफ़ बता दिया, "लाज़र वफ़ात पा गया है। [15]और तुम्हारी ख़ातिर मैं ख़ुश हूँ कि मैं उस के मरते वक़्त वहाँ नहीं था, क्यूँकि अब तुम ईमान लाओगे। आओ, हम उस के पास जाएँ।"

[16]तोमा ने जिस का लक़ब जुड़वाँ था अपने साथी शागिर्दों से कहा, "चलो, हम भी वहाँ जा कर उस के साथ मर जाएँ।"

हज़रत ईसा क़ियामत और ज़िन्दगी हैं

[17]वहाँ पहुँच कर ईसा को मालूम हुआ कि लाज़र को क़ब्र में रखे चार दिन हो गए हैं। [18]बैत-अनियाह का यरूशलम से फ़ासिला तीन किलोमीटर से कम था, [19]और बहुत से यहूदी मर्था और मरियम को उन के भाई के बारे में तसल्ली देने के लिए आए हुए थे।

[20]यह सुन कर कि ईसा आ रहा है मर्था उसे मिलने गई। लेकिन मरियम घर में बैठी रही। [21]मर्था ने कहा, "ख़ुदावन्द, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता। [22]लेकिन मैं जानती हूँ कि अब भी अल्लाह आप को जो भी माँगेंगे देगा।"

[23]ईसा ने उसे बताया, "तेरा भाई जी उठेगा।"

[24]मर्था ने जवाब दिया, "जी, मुझे मालूम है कि वह क़ियामत के दिन जी उठेगा, जब सब जी उठेंगे।"

[25]ईसा ने उसे बताया, "क़ियामत और ज़िन्दगी तो मैं हूँ। जो मुझ पर ईमान रखे वह ज़िन्दा रहेगा, चाहे वह मर भी जाए। [26]और जो ज़िन्दा है और मुझ पर ईमान रखता है वह कभी नहीं मरेगा। मर्था, क्या तुझे इस बात का यक़ीन है?"

[27]मर्था ने जवाब दिया, “जी ख़ुदावन्द, मैं ईमान रखती हूँ कि आप ख़ुदा के फ़र्ज़न्द मसीह हैं, जिसे दुनिया में आना था।”

हज़रत ईसा रोते हैं

[28]यह कह कर मर्था वापस चली गई और चुपके से मरियम को बुलाया, “उस्ताद आ गए हैं, वह तुझे बुला रहे हैं।” [29]यह सुनते ही मरियम उठ कर ईसा के पास गई। [30]वह अभी गाँव के बाहर उसी जगह ठहरा था जहाँ उस की मुलाक़ात मर्था से हुई थी। [31]जो यहूदी घर में मरियम के साथ बैठे उसे तसल्ली दे रहे थे, जब उन्हों ने देखा कि वह जल्दी से उठ कर निकल गई है तो वह उस के पीछे हो लिए। क्यूँकि वह समझ रहे थे कि वह मातम करने के लिए अपने भाई की क़ब्र पर जा रही है।

[32]मरियम ईसा के पास पहुँच गई। उसे देखते ही वह उस के पाँओ में गिर गई और कहने लगी, “ख़ुदावन्द, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता।”

[33]जब ईसा ने मरियम और उस के साथियों को रोते देखा तो उसे बड़ी रंजिश हुई। मुज़्तरिब हालत में [34]उस ने पूछा, “तुम ने उसे कहाँ रखा है?”

उन्हों ने जवाब दिया, “आएँ ख़ुदावन्द, और देख लें।”

[35]ईसा रो पड़ा। [36]यहूदियों ने कहा, “देखो, वह उसे कितना अज़ीज़ था।”

[37]लेकिन उन में से बाज़ ने कहा, “इस आदमी ने अंधे को शिफ़ा दी। क्या यह लाज़र को मरने से नहीं बचा सकता था?”

लाज़र को ज़िन्दा कर दिया जाता है

[38]फिर ईसा दुबारा निहायत रंजीदा हो कर क़ब्र पर आया। क़ब्र एक ग़ार थी जिस के मुँह पर पत्थर रखा गया था। [39]ईसा ने कहा, "पत्थर को हटा दो।"

लेकिन मरहूम की बहन मर्था ने एतिराज़ किया, "ख़ुदावन्द, बदबू आएगी, क्यूँकि उसे यहाँ पड़े चार दिन हो गए हैं।"

[40]ईसा ने उस से कहा, "क्या मैं ने तुझे नहीं बताया कि अगर तू ईमान रखे तो अल्लाह का जलाल देखेगी?" [41]चुनाँचे उन्हों ने पत्थर को हटा दिया। फिर ईसा ने अपनी नज़र उठा कर कहा, "ऐ बाप, मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि तू ने मेरी सुन ली है। [42]मैं तो जानता हूँ कि तू हमेशा मेरी सुनता है। लेकिन मैं ने यह बात पास खड़े लोगों की ख़ातिर की, ताकि वह ईमान लाएँ कि तू ने मुझे भेजा है।" [43]फिर ईसा ज़ोर से पुकार उठा, "लाज़र, निकल आ!" [44]और मुर्दा निकल आया। अभी तक उस के हाथ और पाँओ पट्टियों से बंधे हुए थे जबकि उस का चेहरा कपड़े में लिपटा हुआ था। ईसा ने उन से कहा, "इस के कफ़न को खोल कर इसे जाने दो।"

21 शागिर्दों के साथ आख़िरी खाना

मत्ती 26:26-30

[26]खाने के दौरान ईसा ने रोटी ले कर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके शागिर्दों को दे दिया। उस ने कहा, "यह लो और खाओ। यह मेरा बदन है।"

[27]फिर उस ने मै का प्याला ले कर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे उन्हें दे कर कहा, "तुम सब इस में से पियो। [28]यह मेरा ख़ून है, नए अह्द का वह ख़ून जो बहुतों के लिए बहाया जाता है ताकि उन के गुनाहों को

मुआफ़ कर दिया जाए। [29]मैं तुम को सच बताता हूँ कि अब से मैं अंगूर का यह रस नहीं पियूँगा, क्यूँकि अगली दफ़ा इसे तुम्हारे साथ अपने बाप की बादशाही में ही पियूँगा।"

[30]फिर एक ज़बूर गा कर वह निकले और ज़ैतून के पहाड़ के पास पहुँचे।

22 हज़रत ईसा को मुजरिम ठहराया जाता है

यूहन्ना बाब 18

हज़रत ईसा की गिरिफ़्तारी

[1]यह कह कर ईसा अपने शागिर्दों के साथ निकला और वादी-ए-क़िद्रोन को पार करके एक बाग़ में दाख़िल हुआ। [2]यहूदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करने वाला था वह भी इस जगह से वाक़िफ़ था, क्यूँकि ईसा वहाँ अपने शागिर्दों के साथ जाया करता था। [3]राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने यहूदाह को रोमी फ़ौजियों का दस्ता और बैत-उल-मुक़द्दस के कुछ पहरेदार दिए थे। अब यह मशअलें, लालटैन और हथियार लिए बाग़ में पहुँचे। [4]ईसा को मालूम था कि उसे क्या पेश आएगा। चुनाँचे उस ने निकल कर उन से पूछा, "तुम किस को ढूँड रहे हो?"

[5]उन्हों ने जवाब दिया, "ईसा नासरी को।"

ईसा ने उन्हें बताया, "मैं ही हूँ।"

यहूदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करना चाहता था, वह भी उन के साथ खड़ा था। [6]जब ईसा ने एलान किया, "मैं ही हूँ," तो सब पीछे हट कर ज़मीन पर गिर पड़े। [7]एक और बार ईसा ने उन से सवाल किया, "तुम किस को ढूँड रहे हो?"

उन्हों ने जवाब दिया, "ईसा नासरी को।"

[8]उस ने कहा, “मैं तुम को बता चुका हूँ कि मैं ही हूँ। अगर तुम मुझे ढूँड रहे हो तो इन को जाने दो।” [9]यूँ उस की यह बात पूरी हुई, “मैं ने उन में से जो तू ने मुझे दिए हैं एक को भी नहीं खोया।”

[10]शमाऊन पतरस के पास तलवार थी। अब उस ने उसे मियान से निकाल कर इमाम-ए-आज़म के ग़ुलाम का दहना कान उड़ा दिया (ग़ुलाम का नाम मलख़ुस था)। [11]लेकिन ईसा ने पतरस से कहा, “तलवार को मियान में रख। क्या मैं वह प्याला न पियूँ जो बाप ने मुझे दिया है?”

हज़रत ईसा हन्ना के सामने

[12]फिर फ़ौजी दस्ते, उन के अफ़्सर और बैत-उल-मुक़द्दस के यहूदी पहरेदारों ने ईसा को गिरिफ़्तार करके बांध लिया। [13]पहले वह उसे हन्ना के पास ले गए। हन्ना उस साल के इमाम-ए-आज़म काइफ़ा का सुसर था। [14]काइफ़ा ही ने यहूदियों को यह मश्वरा दिया था कि बेहतर यह है कि एक ही आदमी उम्मत के लिए मर जाए।

पतरस हज़रत ईसा को जानने से इन्कार करता है

[15]शमाऊन पतरस किसी और शागिर्द के साथ ईसा के पीछे हो लिया था। यह दूसरा शागिर्द इमाम-ए-आज़म का जानने वाला था, इस लिए वह ईसा के साथ इमाम-ए-आज़म के सहन में दाख़िल हुआ। [16]पतरस बाहर दरवाज़े पर खड़ा रहा। फिर इमाम-ए-आज़म का जानने वाला शागिर्द दुबारा निकल आया। उस ने गेट की निगरानी करने वाली औरत से बात की तो उसे पतरस को अपने साथ अन्दर ले जाने की इजाज़त मिली। [17]उस औरत ने पतरस से पूछा, “तुम भी इस आदमी के शागिर्द हो कि नहीं?” उस ने जवाब दिया, “नहीं, मैं नहीं हूँ।”

[18]ठंड थी, इस लिए ग़ुलामों और पहरेदारों ने लकड़ी के कोएलों से आग जलाई। अब वह उस के पास खड़े ताप रहे थे। पतरस भी उन के साथ खड़ा ताप रहा था।

इमाम-ए-आज़म ईसा की पूछ-गछ करता है

[19]इतने में इमाम-ए-आज़म ईसा की पूछ-गछ करके उस के शागिर्दों और तालीम के बारे में तफ़्तीश करने लगा। [20]ईसा ने जवाब में कहा, "मैं ने दुनिया में खुल कर बात की है। मैं हमेशा यहूदी इबादतख़ानों और बैत-उल-मुक़द्दस में तालीम देता रहा, वहाँ जहाँ तमाम यहूदी जमा हुआ करते हैं। पोशीदगी में तो मैं ने कुछ नहीं कहा। [21]आप मुझ से क्यूँ पूछ रहे हैं? उन से दरयाफ़्त करें जिन्हों ने मेरी बातें सुनी हैं। उन को मालूम है कि मैं ने क्या कुछ कहा है।"

[22]इस पर साथ खड़े बैत-उल-मुक़द्दस के पहरेदारों में से एक ने ईसा के मुँह पर थप्पड़ मार कर कहा, "क्या यह इमाम-ए-आज़म से बात करने का तरीक़ा है जब वह तुम से कुछ पूछे?"

[23]ईसा ने जवाब दिया, "अगर मैं ने बुरी बात की है तो साबित कर। लेकिन अगर सच कहा, तो तू ने मुझे क्यूँ मारा?"

[24]फिर हन्ना ने ईसा को बंधी हुई हालत में इमाम-ए-आज़म काइफ़ा के पास भेज दिया।

पतरस दुबारा हज़रत ईसा को जानने से इन्कार करता है

[25]शमाऊन पतरस अब तक आग के पास खड़ा ताप रहा था। इतने में दूसरे उस से पूछने लगे, "तुम भी उस के शागिर्द हो कि नहीं?"

लेकिन पतरस ने इन्कार किया, "नहीं, मैं नहीं हूँ।"

[26]फिर इमाम-ए-आज़म का एक ग़ुलाम बोल उठा जो उस आदमी का रिश्तेदार था जिस का कान पतरस ने उड़ा दिया था, "क्या मैं ने तुम को बाग़ में उस के साथ नहीं देखा था?"

[27]पतरस ने एक बार फिर इन्कार किया, और इन्कार करते ही मुर्ग़ की बाँग सुनाई दी।

हज़रत ईसा को पीलातुस के सामने पेश किया जाता है

[28]फिर यहूदी ईसा को काइफ़ा से ले कर रोमी गवर्नर के महल बनाम प्रैटोरियुम के पास पहुँच गए। अब सुब्ह हो चुकी थी और चूँकि यहूदी फ़सह की ईद के खाने में शरीक होना चाहते थे, इस लिए वह महल में दाख़िल न हुए, वर्ना वह नापाक हो जाते। [29]चुनाँचे पीलातुस निकल कर उन के पास आया और पूछा, "तुम इस आदमी पर क्या इल्ज़ाम लगा रहे हो?"

[30]उन्हों ने जवाब दिया, "अगर यह मुजरिम न होता तो हम इसे आप के हवाले न करते।"

[31]पीलातुस ने कहा, "फिर इसे ले जाओ और अपनी शरई अदालतों में पेश करो।"

लेकिन यहूदियों ने एतिराज़ किया, "हमें किसी को सज़ा-ए-मौत देने की इजाज़त नहीं।" [32]ईसा ने इस तरफ़ इशारा किया था कि वह किस तरह मरेगा और अब उस की यह बात पूरी हुई।

[33]तब पीलातुस फिर अपने महल में गया। वहाँ से उस ने ईसा को बुलाया और उस से पूछा, "क्या तुम यहूदियों के बादशाह हो?"

[34]ईसा ने पूछा, "क्या आप अपनी तरफ़ से यह सवाल कर रहे हैं, या औरों ने आप को मेरे बारे में बताया है?"

[35]पीलातुस ने जवाब दिया, "क्या मैं यहूदी हूँ? तुम्हारी अपनी क़ौम और राहनुमा इमामों ही ने तुम्हें मेरे हवाले किया है। तुम से क्या कुछ सरज़द हुआ है?"

[36]ईसा ने कहा, “मेरी बादशाही इस दुनिया की नहीं है। अगर वह इस दुनिया की होती तो मेरे ख़ादिम सख़्त जिद्द-ओ-जह्द करते ताकि मुझे यहूदियों के हवाले न किया जाता। लेकिन ऐसा नहीं है। अब मेरी बादशाही यहाँ की नहीं है।”

[37]पीलातुस ने कहा, “तो फिर तुम वाक़ई बादशाह हो?”

ईसा ने जवाब दिया, “आप सहीह कहते हैं, मैं बादशाह हूँ। मैं इसी मक़्सद के लिए पैदा हो कर दुनिया में आया कि सच्चाई की गवाही दूँ। जो भी सच्चाई की तरफ़ से है वह मेरी सुनता है।”

[38]पीलातुस ने पूछा, “सच्चाई क्या है?”

हज़रत ईसा को सज़ा-ए-मौत सुनाई जाती है

फिर वह दुबारा निकल कर यहूदियों के पास गया। उस ने एलान किया, “मुझे उसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली। [39]लेकिन तुम्हारी एक रस्म है जिस के मुताबिक़ मुझे ईद-ए-फ़सह के मौक़े पर तुम्हारे लिए एक क़ैदी को रिहा करना है। क्या तुम चाहते हो कि मैं ‘यहूदियों के बादशाह’ को रिहा कर दूँ?”

[40]लेकिन जवाब में लोग चिल्लाने लगे, “नहीं, इस को नहीं बल्कि बर-अब्बा को।” (बर-अब्बा डाकू था।)

यूहन्ना 19:1-16

[1]फिर पीलातुस ने ईसा को कोड़े लगवाए। [2]फ़ौजियों ने काँटेदार टह-नियों का एक ताज बना कर उस के सर पर रख दिया। उन्हों ने उसे अर्ग़वानी रंग का लिबास भी पहनाया। [3]फिर उस के सामने आ कर वह कहते, “ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!” और उसे थप्पड़ मारते थे।

[4]एक बार फिर पीलातुस निकल आया और यहूदियों से बात करने लगा, “देखो, मैं इसे तुम्हारे पास बाहर ला रहा हूँ ताकि तुम जान लो कि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।” [5]फिर ईसा काँटेदार

ताज और अर्ग़वानी रंग का लिबास पहने बाहर आया। पीलातुस ने उन से कहा, "लो यह है वह आदमी।"

[6]उसे देखते ही राहनुमा इमाम और उन के मुलाज़िम चीख़ने लगे, "इसे मस्लूब करें, इसे मस्लूब करें!" पीलातुस ने उन से कहा, "तुम ही इसे ले जा कर मस्लूब करो। क्यूँकि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।"

[7]यहूदियों ने इसरार किया, "हमारे पास शरीअत है और इस शरीअत के मुताबिक़ लाज़िम है कि वह मारा जाए। क्यूँकि इस ने अपने आप को अल्लाह का फ़र्ज़न्द क़रार दिया है।"

[8]यह सुन कर पीलातुस मज़ीद डर गया। [9]दुबारा महल में जा कर ईसा से पूछा, "तुम कहाँ से आए हो?"

लेकिन ईसा ख़ामोश रहा। [10]पीलातुस ने उस से कहा, "अच्छा, तुम मेरे साथ बात नहीं करते? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मुझे तुम्हें रिहा करने और मस्लूब करने का इख़तियार है?"

[11]ईसा ने जवाब दिया, "आप को मुझ पर इख़तियार न होता अगर वह आप को ऊपर से न दिया गया होता। इस वजह से उस शख़्स से ज़्यादा संगीन गुनाह हुआ है जिस ने मुझे दुश्मन के हवाले कर दिया है।"

[12]इस के बाद पीलातुस ने उसे आज़ाद करने की कोशिश की। लेकिन यहूदी चीख़ चीख़ कर कहने लगे, "अगर आप इसे रिहा करें तो आप रोमी शहन्शाह क़ैसर के दोस्त साबित नहीं होंगे। जो भी बादशाह होने का दावा करे वह शहन्शाह की मुख़ालफ़त करता है।"

[13]इस तरह की बातें सुन कर पीलातुस ईसा को बाहर ले आया। फिर वह जज की कुर्सी पर बैठ गया। उस जगह का नाम "पच्चीकारी" था। (अरामी ज़बान में वह गब्बता कहलाती थी।) [14]अब दोपहर के तक़रीबन बारह बज गए थे। उस दिन ईद के लिए तय्यारियाँ की जाती थीं, क्यूँकि अगले दिन ईद का आग़ाज़ था। पीलातुस बोल उठा, "लो, तुम्हारा बादशाह!"

[15]लेकिन वह चिल्लाते रहे, “ले जाएँ इसे, ले जाएँ! इसे मस्लूब करें!”

पीलातुस ने सवाल किया, “क्या मैं तुम्हारे बादशाह को सलीब पर चढ़ाऊँ?”

राहनुमा इमामों ने जवाब दिया, “सिवाए शहन्शाह के हमारा कोई बादशाह नहीं है।”

[16]फिर पीलातुस ने ईसा को उन के हवाले कर दिया ताकि उसे मस्लूब किया जाए। चुनाँचे वह ईसा को ले कर चले गए।

23 हज़रत ईसा को मस्लूब किया जाता है

लूक़ा 23:32-56

[32]दो और मर्दों को भी फाँसी देने के लिए बाहर ले जाया जा रहा था।
दोनों मुजरिम थे। [33]चलते चलते वह उस जगह पहुँचे जिस का नाम
खोपड़ी था। वहाँ उन्हों ने ईसा को दोनों मुजरिमों समेत मस्लूब किया।
एक मुजरिम को उस के दाएँ हाथ और दूसरे को उस के बाएँ हाथ लटका
दिया गया। [34]ईसा ने कहा, “ऐ बाप, इन्हें मुआफ़ कर, क्यूँकि यह जानते
नहीं कि क्या कर रहे हैं।”

उन्हों ने क़ुरआ डाल कर उस के कपड़े आपस में बाँट लिए। [35]हुजूम
वहाँ खड़ा तमाशा देखता रहा जबकि क़ौम के सरदारों ने उस का मज़ाक़
भी उड़ाया। उन्हों ने कहा, “उस ने औरों को बचाया है। अगर यह अल्लाह
का चुना हुआ और मसीह है तो अपने आप को बचाए।”

[36]फ़ौजियों ने भी उसे लान-तान की। उस के पास आ कर उन्हों ने उसे
मै का सिरका पेश किया [37]और कहा, “अगर तू यहूदियों का बादशाह
है तो अपने आप को बचा ले।”

[38]उस के सर के ऊपर एक तख़्ती लगाई गई थी जिस पर लिखा था,
“यह यहूदियों का बादशाह है।”

[39]जो मुजरिम उस के साथ मस्लूब हुए थे उन में से एक ने कुफ़्र बकते हुए कहा, "क्या तू मसीह नहीं है? तो फिर अपने आप को और हमें भी बचा ले।"

[40]लेकिन दूसरे ने यह सुन कर उसे डाँटा, "क्या तू अल्लाह से भी नहीं डरता? जो सज़ा उसे दी गई है वह तुझे भी मिली है। [41]हमारी सज़ा तो वाजिबी है, क्यूँकि हमें अपने कामों का बदला मिल रहा है, लेकिन इस ने कोई बुरा काम नहीं किया।" [42]फिर उस ने ईसा से कहा, "जब आप अपनी बादशाही में आएँ तो मुझे याद करें।"

[43]ईसा ने उस से कहा, "मैं तुझे सच बताता हूँ कि तू आज ही मेरे साथ फ़िर्दौस में होगा।"

हज़रत ईसा की मौत

[44]बारह बजे से दोपहर तीन बजे तक पूरा मुल्क अंधेरे में डूब गया। [45]सूरज तारीक हो गया और बैत-उल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने लटका हुआ पर्दा दो हिस्सों में फट गया। [46]ईसा ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, "ऐ बाप, मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूँ।" यह कह कर उस ने दम छोड़ दिया।

[47]यह देख कर वहाँ खड़े फ़ौजी अफ़्सर ने अल्लाह की तम्जीद करके कहा, "यह आदमी वाक़ई रास्तबाज़ था।"

[48]और हुजूम के तमाम लोग जो यह तमाशा देखने के लिए जमा हुए थे यह सब कुछ देख कर छाती पीटने लगे और शहर में वापस चले गए। [49]लेकिन ईसा के जानने वाले कुछ फ़ासिले पर खड़े देखते रहे। उन में वह ख़वातीन भी शामिल थीं जो गलील में उस के पीछे चल कर यहाँ तक उस के साथ आई थीं।

हज़रत ईसा को दफ़न किया जाता है

[50]वहाँ एक नेक और रास्तबाज़ आदमी बनाम यूसुफ़ था। वह यहूदी
अदालत-ए-आलिया का रुकन था [51]लेकिन दूसरों के फ़ैसले और हरक-
तों पर रज़ामन्द नहीं हुआ था। यह आदमी यहूदिया के शहर अरिमतियाह
का रहने वाला था और इस इन्तिज़ार में था कि अल्लाह की बादशाही
आए। [52]अब उस ने पीलातुस के पास जा कर उस से ईसा की लाश ले
जाने की इजाज़त माँगी। [53]फिर लाश को उतार कर उस ने उसे कतान
के कफ़न में लपेट कर चटान में तराशी हुई एक क़ब्र में रख दिया जिस
में अब तक किसी को दफ़नाया नहीं गया था। [54]यह तय्यारी का दिन
यानी जुमआ था, लेकिन सबत का दिन शुरू होने को था। [55]जो औरतें
ईसा के साथ गलील से आई थीं वह यूसुफ़ के पीछे हो लीं। उन्हों ने क़ब्र
को देखा और यह भी कि ईसा की लाश किस तरह उस में रखी गई है।
[56]फिर वह शहर में वापस चली गईं और उस की लाश के लिए ख़ुश्बूदार
मसाले तय्यार करने लगीं। लेकिन बीच में सबत का दिन शुरू हुआ, इस
लिए उन्हों ने शरीअत के मुताबिक़ आराम किया।

24 हज़रत ईसा मौत पर फ़तह पाते हैं

लूक़ा 24:1-35

[1]इत्वार के दिन यह औरतें अपने तय्यारशुदा मसाले ले कर सुब्ह-सवेरे
क़ब्र पर गईं। [2]वहाँ पहुँच कर उन्हों ने देखा कि क़ब्र पर का पत्थर एक
तरफ़ लुढ़का हुआ है। [3]लेकिन जब वह क़ब्र में गईं तो वहाँ ख़ुदावन्द
ईसा की लाश न पाई। [4]वह अभी उलझन में वहाँ खड़ी थीं कि अचानक
दो मर्द उन के पास आ खड़े हुए जिन के लिबास बिजली की तरह चमक
रहे थे। [5]औरतें दह्शत खा कर मुँह के बल झुक गईं, लेकिन उन मर्दों ने
कहा, "तुम क्यूँ ज़िन्दा को मुर्दों में ढूँड रही हो? [6]वह यहाँ नहीं है, वह तो

जी उठा है। वह बात याद करो जो उस ने तुम से उस वक़्त कही जब वह गलील में था। [7]'लाज़िम है कि इब्न-ए-आदम को गुनाहगारों के हवाले कर दिया जाए, मस्लूब किया जाए और कि वह तीसरे दिन जी उठे'।"

[8]फिर उन्हें यह बात याद आई। [9]और क़ब्र से वापस आ कर उन्हों ने यह सब कुछ ग्यारह रसूलों और बाक़ी शागिर्दों को सुना दिया। [10]मरियम मग्दलीनी, यूअन्ना, याक़ूब की माँ मरियम और चन्द एक और औरतें उन में शामिल थीं जिन्हों ने यह बातें रसूलों को बताईं। [11]लेकिन उन को यह बातें बेतुकी सी लग रही थीं, इस लिए उन्हें यक़ीन न आया। [12]तो भी पतरस उठा और भाग कर क़ब्र के पास आया। जब पहुँचा तो झुक कर अन्दर झाँका, लेकिन सिर्फ़ कफ़न ही नज़र आया। यह हालात देख कर वह हैरान हुआ और चला गया।

इम्माउस के रास्ते में हज़रत ईसा से मुलाक़ात

[13]उसी दिन ईसा के दो पैरोकार एक गाँव बनाम इम्माउस की तरफ़ चल रहे थे। यह गाँव यरूशलम से तक़रीबन दस किलोमीटर दूर था। [14]चलते चलते वह आपस में उन वाक़िआत का ज़िक्र कर रहे थे जो हुए थे। [15]और ऐसा हुआ कि जब वह बातें और एक दूसरे के साथ बहस-मुबाहसा कर रहे थे तो ईसा ख़ुद क़रीब आ कर उन के साथ चलने लगा। [16]लेकिन उन की आँखों पर पर्दा डाला गया था, इस लिए वह उसे पहचान न सके। [17]ईसा ने कहा, "यह कैसी बातें हैं जिन के बारे में तुम चलते चलते तबादला-ए-ख़याल कर रहे हो?"

यह सुन कर वह ग़मगीन से खड़े हो गए। [18]उन में से एक बनाम क्लियुपास ने उस से पूछा, "क्या आप यरूशलम में वाहिद शख़्स हैं जिसे मालूम नहीं कि इन दिनों में क्या कुछ हुआ है?"

[19]उस ने कहा, "क्या हुआ है?"

उन्हों ने जवाब दिया, "वह जो ईसा नासरी के साथ हुआ है। वह नबी था जिसे कलाम और काम में अल्लाह और तमाम क़ौम के सामने ज़बर-

दस्त क़ुव्वत हासिल थी। [20]लेकिन हमारे राहनुमा इमामों और सरदारों ने
उसे हुक्मरानों के हवाले कर दिया ताकि उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए, और
उन्हों ने उसे मस्लूब किया। [21]लेकिन हमें तो उम्मीद थी कि वही इस्राईल
को नजात देगा। इन वाक़िआत को तीन दिन हो गए हैं। [22]लेकिन हम में
से कुछ ख़वातीन ने भी हमें हैरान कर दिया है। वह आज सुब्ह-सवेरे क़ब्र
पर गईं [23]तो देखा कि लाश वहाँ नहीं है। उन्हों ने लौट कर हमें बताया
कि हम पर फ़रिश्ते ज़ाहिर हुए जिन्हों ने कहा कि ईसा ज़िन्दा है। [24]हम
में से कुछ क़ब्र पर गए और उसे वैसा ही पाया जिस तरह उन औरतों ने
कहा था। लेकिन उसे ख़ुद उन्हों ने नहीं देखा।”

[25]फिर ईसा ने उन से कहा, “अरे नादानो! तुम कितने कुन्दज़हन हो
कि तुम्हें उन तमाम बातों पर यक़ीन नहीं आया जो नबियों ने फ़रमाई हैं।
[26]क्या लाज़िम नहीं था कि मसीह यह सब कुछ झेल कर अपने जलाल
में दाख़िल हो जाए?” [27]फिर मूसा और तमाम नबियों से शुरू करके
ईसा ने कलाम-ए-मुक़द्दस की हर बात की तश्रीह की जहाँ जहाँ उस का
ज़िक्र है।

[28]चलते चलते वह उस गाँव के क़रीब पहुँचे जहाँ उन्हें जाना था। ईसा
ने ऐसा किया गोया कि वह आगे बढ़ना चाहता है, [29]लेकिन उन्हों ने
उसे मज्बूर करके कहा, “हमारे पास ठहरें, क्यूँकि शाम होने को है और
दिन ढल गया है।” चुनाँचे वह उन के साथ ठहरने के लिए अन्दर गया।
[30]और ऐसा हुआ कि जब वह खाने के लिए बैठ गए तो उस ने रोटी ले
कर उस के लिए शुक्रगुज़ारी की दुआ की। फिर उस ने उसे टुकड़े करके
उन्हें दिया। [31]अचानक उन की आँखें खुल गईं और उन्हों ने उसे पहचान
लिया। लेकिन उसी लम्हे वह ओझल हो गया। [32]फिर वह एक दूसरे से
कहने लगे, “क्या हमारे दिल जोश से न भर गए थे जब वह रास्ते में हम
से बातें करते करते हमें सहीफ़ों का मतलब समझा रहा था?”

[33]और वह उसी वक़्त उठ कर यरूशलम वापस चले गए। जब वह
वहाँ पहुँचे तो ग्यारह रसूल अपने साथियों समेत पहले से जमा थे [34]और

यह कह रहे थे, “ख़ुदावन्द वाक़ई जी उठा है! वह शमाऊन पर ज़ाहिर हुआ है।”

35 फिर इम्माउस के दो शागिर्दों ने उन्हें बताया कि गाँव की तरफ़ जाते हुए क्या हुआ था और कि ईसा के रोटी तोड़ते वक़्त उन्हों ने उसे कैसे पहचाना।

25 शागिर्दों पर ज़ुहूर और सऊद-ए-मसीह

लूक़ा 24:36-53

हज़रत ईसा शागिर्दों पर ज़ाहिर होते हैं

36 वह अभी यह बातें सुना रहे थे कि ईसा ख़ुद उन के दरमियान आ खड़ा हुआ और कहा, “तुम्हारी सलामती हो।”

37 वह घबरा कर बहुत डर गए, क्यूँकि उन का ख़याल था कि कोई
भूत-प्रेत देख रहे हैं। 38 उस ने उन से कहा, “तुम क्यूँ परेशान हो गए हो?
क्या वजह है कि तुम्हारे दिलों में शक उभर आया है? 39 मेरे हाथों और
पाँओ को देखो कि मैं ही हूँ। मुझे टटोल कर देखो, क्यूँकि भूत के गोश्त और हड्डियाँ नहीं होतीं जबकि तुम देख रहे हो कि मेरा जिस्म है।”

40 यह कह कर उस ने उन्हें अपने हाथ और पाँओ दिखाए। 41 जब उन्हें
ख़ुशी के मारे यक़ीन नहीं आ रहा था और ताज्जुब कर रहे थे तो ईसा ने
पूछा, “क्या यहाँ तुम्हारे पास कोई खाने की चीज़ है?” 42 उन्हों ने उसे
भुनी हुई मछली का एक टुकड़ा दिया 43 उस ने उसे ले कर उन के सामने ही खा लिया।

44 फिर उस ने उन से कहा, “यही है जो मैं ने तुम को उस वक़्त बताया था जब तुम्हारे साथ था कि जो कुछ भी मूसा की शरीअत, नबियों के सहीफ़ों और ज़बूर की किताब में मेरे बारे में लिखा है उसे पूरा होना है।”

[45]फिर उस ने उन के ज़हन को खोल दिया ताकि वह अल्लाह का कलाम समझ सकें। [46]उस ने उन से कहा, "कलाम-ए-मुक़द्दस में यूँ लिखा है, मसीह दुख उठा कर तीसरे दिन मुर्दों में से जी उठेगा। [47]फिर यरूशलम से शुरू करके उस के नाम में यह पैग़ाम तमाम क़ौमों को सुनाया जाएगा कि वह तौबा करके गुनाहों की मुआफ़ी पाएँ। [48]तुम इन बातों के गवाह हो। [49]और मैं तुम्हारे पास उसे भेज दूँगा जिस का वादा मेरे बाप ने किया है। फिर तुम को आसमान की क़ुव्वत से मुलब्बस किया जाएगा। उस वक़्त तक शहर से बाहर न निकलना।"

हज़रत ईसा को आसमान पर उठाया जाता है

[50]फिर वह शहर से निकल कर उन्हें बैत-अनियाह तक ले गया। वहाँ उस ने अपने हाथ उठा कर उन्हें बरकत दी। [51]और ऐसा हुआ कि बरकत देते हुए वह उन से जुदा हो कर आसमान पर उठा लिया गया। [52]उन्हों ने उसे सिज्दा किया और फिर बड़ी ख़ुशी से यरूशलम वापस चले गए। [53]वहाँ वह अपना पूरा वक़्त बैत-उल-मुक़द्दस में गुज़ार कर अल्लाह की तम्जीद करते रहे।

26 इन्तिख़ाब की ज़रूरत है

यूहन्ना 3:1-21

[1]फ़रीसी फ़िर्क़े का एक आदमी बनाम नीकुदेमुस था जो यहूदी अदालत-ए-आलिया का रुकन था। [2]वह रात के वक़्त ईसा के पास आया और कहा, "उस्ताद, हम जानते हैं कि आप ऐसे उस्ताद हैं जो अल्लाह की तरफ़ से आए हैं, क्यूँकि जो इलाही निशान आप दिखाते हैं वह सिर्फ़ ऐसा शख़्स ही दिखा सकता है जिस के साथ अल्लाह हो।"

[3]ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे सच बताता हूँ, सिर्फ़ वह शख़्स अल्लाह की बादशाही को देख सकता है जो नए सिरे से पैदा हुआ हो।”

[4]नीकुदेमुस ने एतिराज़ किया, “क्या मतलब? बूढ़ा आदमी किस तरह नए सिरे से पैदा हो सकता है? क्या वह दुबारा अपनी माँ के पेट में जा कर पैदा हो सकता है?”

[5]ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे सच बताता हूँ, सिर्फ़ वह शख़्स अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हो सकता है जो पानी और रूह से पैदा हुआ हो। [6]जो कुछ जिस्म से पैदा होता है वह जिस्मानी है, लेकिन जो रूह से पैदा होता है वह रुहानी है। [7]इस लिए तू ताज्जुब न कर कि मैं कहता हूँ, ‘तुम्हें नए सिरे से पैदा होना ज़रूर है।’ [8]हवा जहाँ चाहे चलती है। तू उस की आवाज़ तो सुनता है, लेकिन यह नहीं जानता कि कहाँ से आती और कहाँ को जाती है। यही हालत हर उस शख़्स की है जो रूह से पैदा हुआ है।”

[9]नीकुदेमुस ने पूछा, “यह किस तरह हो सकता है?”

[10]ईसा ने जवाब दिया, “तू तो इस्राईल का उस्ताद है। क्या इस के बावुजूद भी यह बातें नहीं समझता? [11]मैं तुझ को सच बताता हूँ, हम वह कुछ बयान करते हैं जो हम जानते हैं और उस की गवाही देते हैं जो हम ने ख़ुद देखा है। तो भी तुम लोग हमारी गवाही क़बूल नहीं करते। [12]मैं ने तुम को दुनियावी बातें सुनाई हैं और तुम उन पर ईमान नहीं रखते। तो फिर तुम क्यूँकर ईमान लाओगे अगर तुम्हें आसमानी बातों के बारे में बताऊँ? [13]आसमान पर कोई नहीं चढ़ा सिवाए इब्न-ए-आदम के, जो आसमान से उतरा है।

[14]और जिस तरह मूसा ने रेगिस्तान में साँप को लकड़ी पर लटका कर ऊँचा कर दिया उसी तरह ज़रूर है कि इब्न-ए-आदम को भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए, [15]ताकि हर एक को जो उस पर ईमान लाएगा अबदी ज़िन्दगी मिल जाए। [16]क्यूँकि अल्लाह ने दुनिया से इतनी मुहब्बत रखी कि उस ने अपने इक्लौते फ़र्ज़न्द को बख़्श दिया, ताकि जो भी उस पर

ईमान लाए हलाक न हो बल्कि अबदी ज़िन्दगी पाए। [17]क्यूँकि अल्लाह ने अपने फ़र्ज़न्द को इस लिए दुनिया में नहीं भेजा कि वह दुनिया को मुजरिम ठहराए बल्कि इस लिए कि वह उसे नजात दे।

[18]जो भी उस पर ईमान लाया है उसे मुजरिम नहीं क़रार दिया जाएगा, लेकिन जो ईमान नहीं रखता उसे मुजरिम ठहराया जा चुका है। वजह यह है कि वह अल्लाह के इक्लौते फ़र्ज़न्द के नाम पर ईमान नहीं लाया। [19]और लोगों को मुजरिम ठहराने का सबब यह है कि गो अल्लाह का नूर इस दुनिया में आया, लेकिन लोगों ने नूर की निस्बत अंधेरे को ज़्यादा प्यार किया, क्यूँकि उन के काम बुरे थे। [20]जो भी ग़लत काम करता है वह नूर से दुश्मनी रखता है और उस के क़रीब नहीं आता ताकि उस के बुरे कामों का पोल न खुल जाए। [21]लेकिन जो सच्चा काम करता है वह नूर के पास आता है ताकि ज़ाहिर हो जाए कि उस के काम अल्लाह के वसीले से हुए हैं।”